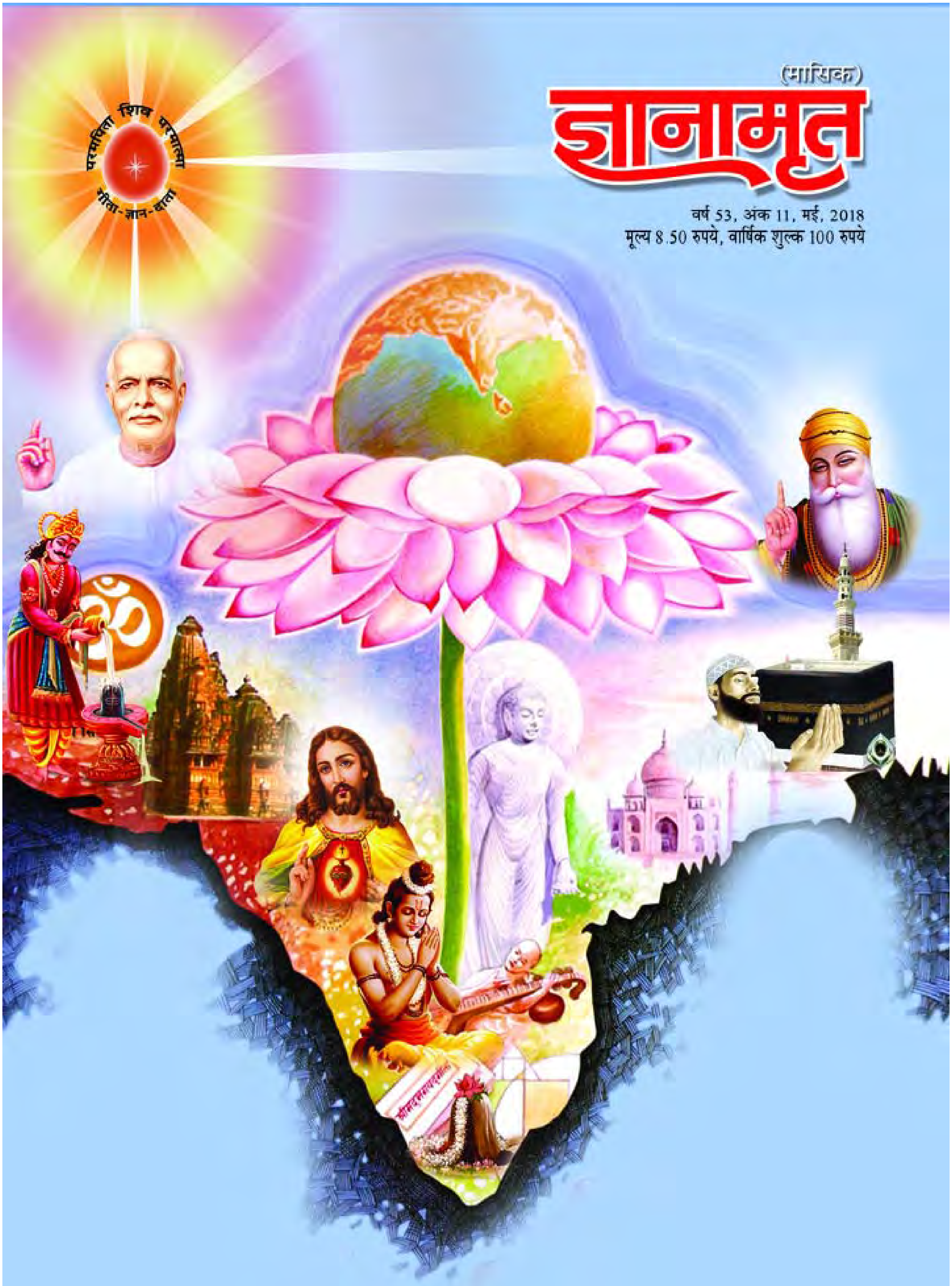
परमपिता शिव परमात्मा
गीता-ज्ञान-दाता
(मासिक)
ज्ञानामृत
वर्ष 53, अंक 11, मई, 2018
मूल्य 8.50 रुपये, वार्षिक शुल्क 100 रुपये

RNI No.10563/1965, Postal Regd. No.RJ/SRO/9559/2018-2020 Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment No. RJ/WR/WPP/002/2018-2020. Published on 20th of each Month &
Posted on 26th to 1st of each month. Price 1 copy Rs. 8.50, Issue : May, 2018.

1. जबलपुर (भंवरताल)- गोल्डन जुबली समारोह का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी जी, स्वामी जनमेजयशरण महाराज, विधायक भ्राता ईश्वरदास रोहाणी, महापौर स्वाती गोडबोले, ब्र.कु.आत्मप्रकाश भाई, ब्र.कु.कमला बहन तथा अन्य।

2. इंदौर (ओम शान्ति भवन)- 'रिलिजन कॉन्क्लेव हमसाज' में मंच पर एकताबद्ध खड़े हैं महामण्डलेश्वर लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी; भीक्खु प्रज्ञादीप; शहजादा डॉ.अब्देअली सैफुद्दीन; जैनाचार्य डॉ.लोकेशमुनि;ब्र.कु.उर्मिला बहन; डॉ.निलिम्प त्रिपाठी, प्रो.वैदिक यूनिवर्सिटी, भोपाल; अ.सै.अब्दुल्लाह तारिक, इस्लामिक स्कॉलर; डॉ.हरबंस सिंह, कथावाचक; भय्यू जी महाराज, समाजसेवी सन्त तथा अन्य धर्मगुरु।

3.मण्डला- शिव आनन्द महोत्सव कार्यक्रम में मंचासीन हैं राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी जी, ब्र.कु.आरती बहन, ब्र.कु.लीला बहन, ब्र.कु.शारदा बहन, सांसद बहन सम्पतिया जी, सांसद भ्राता फग्गन सिंह तथा अन्य।

4.नरसिंहपुर- रजत जयन्ती समारोह में मंचासीन हैं राजयोगिनी दादी रत्नमोहिनी जी, ब्र.कु.आत्मप्रकाश भाई, ब्र.कु.कमला बहन, ब्र.कु.हेमलता बहन, ब्र.कु.शारदा बहन तथा अन्य।

संजय की कलम से

मन की पूर्ण निर्मलता

खेद की बात है कि आज मनुष्य एक करोड़ झूठे उपाय कर रहे हैं ताकि विश्व में भाई-चारा हो, भ्रष्टाचार बन्द हो, मार-काट, भेद-भाव, ईर्ष्या-द्वेष, लड़ाई-झगड़ा समाप्त हो और सभी सुख-शान्ति तथा मित्रता और प्यार भाव से जीयें परन्तु उसके लिये जो 'मन की पूर्ण निर्मलता' रूपी गुण आवश्यक है; उसके लिये वे प्रयत्न नहीं कर रहे। यह तो ऐसा उपाय है कि जिसके लिये 'न हींग लगे, न फिटकरी परन्तु रंग भी चोखा होए।' फिर भी मनुष्य इस अचूक उपाय का प्रयोग नहीं कर रहे। आतंकवादियों, अपराधियों, रिश्वतखोरों इत्यादि हरेक के लिये वे अलग-अलग उपाय और खर्च कर रहे हैं परन्तु मानव मन की पवित्रता के लिये वे जम कर, एकजुट होकर कुछ भी नहीं कर रहे।

आज उद्योगपतियों, उपभोक्ताओं, उत्पादकों, विक्रेताओं इत्यादि सभी का ध्यान गुणवत्ता पर है। आज सभी अन्य वस्तुओं की श्रेष्ठता का लक्ष्य तो अपने सामने रखते हैं परन्तु मन की श्रेष्ठ पवित्रता पर ध्यान नहीं देते। यहाँ तक कि जो साधु-सन्त हैं या योगीजन हैं, वे भी पारदर्शिता की मंजिल तक पवित्रता को ले जाने के लिये कटिबद्ध नहीं हैं। आज सभी के मन में कुछ-न-कुछ कुटिलता, घृणा, वैर-विरोध, ईर्ष्या-द्वेष का निवास है। अत: इस संसार में पाप पनप रहे हैं।

हमें यह ध्यान में रखना चाहिये कि सद्गुणों को धारण किये बिना योग में भी स्थिरता और उच्च स्थिति की प्राप्ति नहीं हो सकती और अच्छे योग के बिना सद्गुणों का भी विकास नहीं हो सकता, न ही उनकी पूर्ण धारणा हो सकती है। अत: अब अन्य लफड़ों को छोड़ कर, रगड़े-झगड़े, खींचातानी और रावण-कहानी को छोड़ कर चेत जाने में भलाई है।

दुनिया में किसी का किसी से मन-मुटाव है तो अन्य किसी का दूसरे के प्रति लगाव और झुकाव है। कोई किसी की शिकायत कर रहा है तो दूसरा पंच बन कर उनकी पंचायत कर रहा है। कोई जेब भरने में लगा है तो कोई फरेब करने में। पता नहीं कोई कितने समय के लिये पैसा इकट्ठा कर रहा है तो कोई नाम सेवा का ले कर के यश का चिट्ठा भर रहा है। कोई 'क्षेत्र' या 'प्रभाग' के लिए लड़ रहा है तो कोई ईर्ष्या-द्वेष से मर रहा है। कोई 'भगवान' की बजाय 'पकवान' को याद कर रहा है तो कोई सच की बजाय झूठ के जीने पर चढ़ रहा है। कोई आया था योगी बनने परन्तु भोगों के भँवर में फँस रहा है तो कोई तड़क-भड़क के फेर में धंस रहा है। भगवान का कहना है –

अरे ओ जाग मनुआ, जाग, अब तो गफलत को त्याग।
गुण और गुणवत्ता पर ध्यान दे, योगी बनने की ठान ले।
अब घर वापस जाना है, यह देश हुआ बेगाना है।।

अमृत-सूची

- कर्म छिपाया न छिपे (संपादकीय)..4
- भगवान - पुत्र रूप में............6
- पहल कीजिए, गायन होगा.......7
- प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के....8
- जड़ चीज़ों में खुशी की 10
- खूबसूरत जिन्दगी का राज 11
- महिला सशक्तिकरण..........12
- शिवबाबा का धन्धा *(कविता)*. .14
- जीवन परिवर्तन के लिए........15
- खुशनुमा जीवन के तीन मूल....16
- तोड़ो,व्यसनों की कारा.........17
- मधुबन महायज्ञ मनइच्छित......20
- वे अशान्त मन को शान्त.........22
- युवा तू कर *(कविता)* 23
- अब मैं डिप्रेशन से मुक्त हूँ.......24
- जिंदगी को ढूंढ़ने मत जाओ......26
- पत्र सम्पादक के नाम 28
- सचित्र समाचार 29
- अँखियों के झरोखे 30
- विकारों रूपी वायरस 31
- सचित्र समाचार 32
- अवगुणी दृष्टि समाप्त करने....34

सदस्यता शुल्क

	भारत	विदेश
वार्षिक	100 /-	1,000/-
आजीवन	2,000 /-	10,000/-

शुल्क 'ज्ञानामृत' के नाम से ड्राफ्ट या ई-मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- 'ज्ञानामृत', ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन-307510 (आबू रोड) राजस्थान, भारत।**

For Online Subscription

Bank Name : State Bank of India
A/c Holder Name : Gyanamrit
A/c No. : 30297656367
Branch Name : PBKIVV, Shantivan
IFSC Code : SBIN0010638

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क सूत्र :
Mobile : 09414006904, 09414423949
Email : hindigyanamrit@gmail.com
: omshantipress@bkivv.org

कर्म छिपाया न छिपे

हमने उस नवयुवक की कहानी सुनी है जिसने असहाय बुढ़िया के दुखते कन्धे पर दवा लगाई और उसकी अपनी उंगलियों का दर्द दूर हो गया। दूसरे का दर्द मिटाने से यदि अपना दर्द मिटता है तो अवश्य ही, दूसरों को दर्द देने से अपने को दर्द मिलता भी है।

कर्म नहीं, फल दिखता है

एक बुजुर्ग व्यक्ति प्रतिदिन कबूतरों को दाने डालते हैं और कुत्तों को रोटी देते हैं परन्तु एक पाँव से लाचार हैं, बिना बैसाखी के एक कदम भी नहीं चल सकते हैं। उन्हें देखकर विचार आता है कि प्रकृति या भगवान ने इस इतने अच्छे आदमी को पाँव से लाचार क्यों कर दिया परन्तु जो दिख रहा है वो सत्य नहीं है। सत्य यह है कि अपनी युवावस्था में, पद के अहंकार में कई निर्दोषों पर उसने अत्याचार किए थे। कइयों के हाथ-पाँव अहंकारवश तोड़ डाले थे। इसी दायें पैर से कइयों को ठोकर मारी थी, अपमानित किया था। वह कर्म न तब किसी को दिखा, न अब किसी को दिख रहा है परन्तु उसका फल सभी को दिख रहा है।

स्वयं कर्त्ता और स्वयं गवाह

यदि व्यक्ति छिपकर, अकेले में बुरे कर्म करता है और सोचता है कि उसे कोई नहीं देख रहा, तो यह उसका भ्रम है। उन कर्मों की रिकार्डिंग, संस्कार रूप में उसकी आत्मा में स्वतः होती जाती है। इस प्रकार वह स्वयं कर्त्ता और स्वयं ही अपनी करनी का गवाह बन जाता है। ये संस्कार ही उसके आगे के जीवन में उसकी उन्नति या अवनति, लाभ या हानि, प्रेम या नफरत...आदि को आकर्षित करते हैं। दूसरा, भगवान से भी कोई कुछ छिपा नहीं सकता। कर्मों के दो निरीक्षक सदा हमारे साथ हैं, एक हम स्वयं और दूसरा परमात्मा इसलिए कभी भी बुरा कर्म न करें। कहा गया है –

पाप छुपाया न छुपे, छुपे तो मोटो भाग।
दाजी दूबी ना रहे, रूई लपेटी आग।।

भावार्थ यही है कि पाप कर्म को छिपाना, दबाना या उसके प्रभाव को नष्ट करना उसी प्रकार असम्भव है जैसे कि रूई में लपेटकर आग को छिपाना असम्भव है।

कर्म प्रत्यक्ष, भावनाएँ अप्रत्यक्ष

हम प्रतिदिन जो भोजन खाते हैं, शरीर में जाकर, पाचन क्रिया के द्वारा उसकी दो श्रेणियाँ बनती हैं। एक श्रेणी है उसका सूक्ष्म भाग, जो रक्त में मिलकर शरीर का एक हिस्सा बन जाता है और दूसरा है उसका मोटा भाग, जो उत्सर्जन क्रिया द्वारा शरीर से बाहर फेंक दिया जाता है। इसी प्रकार, जब हम कोई भी कर्म करते हैं तो उसके भी दो पहलू हैं। एक है प्रत्यक्ष पहलू और दूसरा है उस कर्म के समय की मन की भावना, जो अप्रत्यक्ष होती है। मान लीजिए, हमने किसी व्यक्ति को एक कीमती खिलौना दिया। खिलौना प्रत्यक्ष है परन्तु खिलौना देते समय मन की भावनाएँ कैसी थी? अहंकार की थी, दया की थी, दिखावे की थी, मान-इज्जत पाने की थी या नेकी कर दरिया में डाल – इस प्रकार की थी? खिलौना तो नश्वर है, प्रकृति का बना है, प्रकृति के जगत में ही रहेगा परन्तु उसको आधार बनाकर हमारी जो भावनाएँ निर्मित हुई, वो हमेशा हमारे साथ रहेंगी। ये भावनाएँ ही कर्म की सच्ची कमाई हैं। कर्म के बदले मिलने वाली आर्थिक कमाई अल्पकाल तक साथ रहेगी परन्तु कर्म

करते समय या करने के बाद निर्मित भावनाएँ किसी भी हालत में हमसे जुदा नहीं होंगी, न इस जन्म में, न अगले जन्म में।

सुप्रसिद्ध लुकमान हकीम बचपन में गरीबी के कारण किसी जमींदार के पास गुलाम के रूप में बिक चुका था। उसका मालिक धन के नशे में चूर होकर दिन-रात पाप करता था। मालिक की कठोर यातनाओं से लुकमान दुखी था परन्तु लुकमान को रहम भी आता था कि यह किसी तरह सन्मार्ग पर आए।

आखिर मालिक के विश्वासपात्र लुकमान को एक युक्ति सूझ गई। जब वर्षा ऋतु आई, मालिक ने लुकमान को खेतों में गेहूँ बोने का आदेश दिया परन्तु लुकमान ने नौकरों से जौ की बिजाई करवा दी। एक दिन मालिक ने पूछा, लुकमान गेहूँ बो दिए? लुकमान ने कहा, जी मालिक। मालिक ने कहा, लुकमान, नौकर तो कह रहे हैं, जौ बिजे गए हैं, तुम झूठ बोल रहे हो या ये नौकर? लुकमान बोला, मालिक, जब खेती पकेगी तो हम गेहूँ ही प्राप्त करेंगे। गुस्साया मालिक खेतों की ओर चल दिया और देखा, सब खेतों में जौ ही जौ हैं, गेहूँ कहीं नजर नहीं आए। उसने नौकरों को डाँटा। नौकरों ने कहा, मालिक, लुकमान ने हमें जो आदेश दिया, हमने तो वही किया है। लुकमान से पुनः पूछा गया तो उसने कहा, मालिक, समय आने पर हम गेहूँ ही काटेंगे। लुकमान को झूठ बोलते देख मालिक और ज्यादा गुस्सा गया, उसे आश्चर्य भी हुआ कि इसने यह नादानी कैसे की, इतनी हिम्मत कैसे हुई इसकी? लुकमान रोनी-सी सूरत बनाकर बोला, हुजूर, मानलो जौ बो दिए पर काटेंगे तो गेहूँ ही न। अब तो मालिक और अधिक आगबबूला होकर चिल्लाया, पागल हो गए हो तुम, बबूल बोकर कभी किसी ने आम खाए हैं? लुकमान गम्भीर होकर बोला, मेरे मालिक, आपको रुष्ट होने की आवश्यकता नहीं है, हम जौ बोकर भी गेहूँ ही काटेंगे। अब तो मालिक आपे से बाहर हो गया और उसके सिर में दो थप्पड़ मारकर, अफसोस करते हुए बोला, मेरा लुकमान इतना समझदार था, आज पता नहीं यह क्यों बकवास कर रहा है? अरे, अब भी अपनी गलती स्वीकार कर ले। लुकमान बोला, मैंने सोच-समझकर ही जौ बोने का आदेश दिया है मालिक। यदि आप दिन-रात क्रूरता, अन्याय, अधर्म का पक्ष लेते हैं, बिना बात क्रोध-अहंकार दिखाते हैं और फिर भी स्वर्ग की सीट पाने का स्वयं को हकदार समझते हैं तो फिर मेरे लिए जौ बोकर गेहूँ काटने की आश रखना क्या बुरी बात है?

लुकमान की इस तर्कसंगत बात का मालिक के दिल पर गहरा प्रभाव पड़ा। उसे पश्चाताप हुआ, उसने अपने आपको बदला। इसके बाद उसकी वाणी में मिठास आ गई। अत्याचार, अन्याय बन्द हो गए। लुकमान को उसने धन्यवाद दिया कि तुमने समय रहते मेरी आँखें खोल दी।

हमारा कर्म, हमारा नसीब

हर घड़ी हमारे सामने प्रश्न आते हैं। कुछ छोटे होते हैं, कुछ बड़े। बड़े प्रश्नों के उत्तर ढूँढ़ते समय हमें सावधानी बरतनी है। किसी भी समस्या के कम से कम दो उत्तर होते हैं। समस्या को सुलझाने में हमने अगर तात्कालिक लाभ के लिये ऐसा उत्तर चुना जिससे नैतिकता, विवेक, सुविचार पाँवों तले आ गये तो हमने गलत कर्म किया। इसकी जगह अगर भौतिक नुकसान को भी स्वीकार कर विवेक, सुविचार, नैतिकता को शिरोधार्य करने वाला उत्तर चुना तो हमने सही कर्म किया, उचित निर्णय लिया। उससे हमारा नसीब उजला हो गया। बात है उचित-अनुचित की, आर्थिक लाभ-हानि की नहीं। कर्म उचित किया जाए तो नसीब अवश्य बदलता है। हमारे नसीब के शिल्पकार हम ही हैं। हमारा कर्म ही हमारा नसीब है। लुकमान ने क्रूर मालिक पर रहम किया। उसकी कठोरता को अपने रहम से पिघला दिया। दिल की सच्ची शुभभावना कि 'मालिक पाप से बचे' रंग लाई। परिणाम यह निकला कि गुलाम लुकमान दुनिया का प्रसिद्ध हकीम बन अपना यश दुनिया में फैला गया। उसकी रहमदिली, नेकदिली ने उसका नसीब बदल डाला।

दण्ड कौन देता है

ईश्वर को अलग से न तो किसी को दण्ड ही देना है और न ही किसी को पुरस्कृत ही करना है क्योंकि मनुष्य के हृदय के भाव ही उसे दण्डित वा पुरस्कृत करते रहते हैं।

ऐसा विधान है कर्म का कि चाकू पर हाथ मारने वाला लहूलुहान होगा ही, उसे चोट खाने से कोई रोक नहीं सकता। इसी तरह जो व्यक्ति अन्य के प्रति गलत भाव रखता है, उसका वह गलत भाव ही उसे चैन नहीं लेने देता। एक ओर ईश्वर के प्रति श्रद्धा-भक्ति रहे, दूसरी ओर ईश्वर के बच्चों के प्रति गलत भाव रखे, किसी को कटुवचन कहने में अटकाव न आये, किसी का हक मारकर स्वयं को मोटा बनाये, ऐसा व्यक्ति कष्ट पायेगा ही। ईश्वरीय शक्ति उस व्यक्ति की कोई सहायता नहीं कर सकती। इसलिए अपने कर्मों के निर्णायक स्वयं बनो। कर्म-फल से पहले कर्म रूपी बीज पर ध्यान दो।

ब्र.कु. आत्म प्रकाश

भगवान – पुत्र रूप में

ब्रह्माकुमार श्रीगोपाल, चन्द्राटावर्स, वाराणसी

मैं 67 वर्षीय नि:सन्तान व्यापारी हूँ। लौकिक में अपना कोई बच्चा न होने से मैं काफी चिन्तित रहता था। व्यापार के सिलसिले में काफी यात्रायें करनी पड़ती थी। ट्रेन में कई बार, कई सहयात्री मिलते और तरह-तरह की बातें पूछते जैसे कि नाम क्या है, क्या करते हो, रहते कहाँ हो, कितने बच्चे हैं आदि-आदि। जब बच्चे की बात आती तो मैं मायूस हो जाता, कुछ भी कह नहीं पाता। फिर वह सहयात्री उपदेश करने लगता कि कैसे रहोगे, बूढ़े होने पर आपकी देखभाल कौन करेगा? इस प्रकार वह काफी डरा-सा देता और फिर कहता कि अभी भी समय है, अपनी व्यवस्था कर लो। ऐसे में मैं किसी तरह बात को दूसरी तरफ मोड़ने की कोशिश करता। चार साल पहले तक ऐसा अक्सर होता रहता था।

अब पिछले चार सालों से मैं प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय, वाराणसी का नियमित विद्यार्थी हूँ। एक दिन प्यारे शिव बाबा ने अपने महावाक्यों में कहा, आप बाबा से जो भी सम्बन्ध चाहें जोड़ लें, बाबा सर्व सम्बन्धों की मीठी सैक्रिन है। फिर क्या था, हमने प्यारे शिवबाबा के साथ बच्चे का सम्बन्ध जोड़ लिया।

घर में जब भोग लगाते थे तो शिवबाबा को, बाप रूप में बुलाते थे स्वीकार करने के लिए। एक-दो दिन तो बहुत झिझक आई कि बाबा को बच्चे के रूप में कैसे बुलाएँ। लेकिन इसके बाद हमने बाप रूप के साथ-साथ, बेटे रूप में भी बाबा का आह्वान किया भोग स्वीकार करने के लिए। कमाल हो गया! बड़ी शान्ति मिलने लगी।

इसके बाद व्यापार के सिलसिले में फिर यात्रा पर जाना पड़ा। एक सहयात्री ने फिर से सवाल पूछे कि कहाँ रहते हो, कितने बच्चे हैं, वे क्या करते हैं आदि-आदि। इस बार मैंने निश्चय और गर्व से उत्तर दिया कि मेरा बेटा विश्व को पढ़ाने का काम करता है। वह असमंजस में पड़ गया कि कोई विश्व को कैसे पढ़ा सकता है! मैंने पूछा, क्या आपने प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय का नाम सुना है? उसने कहा, हाँ, नाम तो सुना है। मैंने कहा, मेरा बेटा इसी विश्व विद्यालय में पढ़ाने का काम करता है। वह व्यक्ति इस विद्यालय के सम्पर्क में रहने वाला था इसलिए समझ गया कि मेरा इशारा भगवान की ओर है। इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय में भगवान ही पढ़ाता है।

यकीन मानिए, अब कोई मायूसी नहीं है कि मेरी कोई लौकिक सन्तान नहीं है। अब यह चिन्ता बिल्कुल नहीं है कि मैं अकेला हूँ। मेरे सब सम्बन्ध मेरे भोले बाबा, शिवबाबा से जुड़ गए हैं। भगवान हमारे माता-पिता हैं, यह सत्य है परन्तु जिस भी सम्बन्ध की कमी खलती हो, भगवान उस कमी को भरने के लिए उसी सम्बन्ध से अपना प्यार लुटाने लगते हैं, बशर्ते कि हम दिल से उस प्यार को स्वीकार करें और भगवान को उस सम्बन्ध में अपने साथ अनुभव करें। ❖

पहल कीजिए, गायन होगा

ब्रह्माकुमारी संतोष, तोशाम (हरियाणा)

हम सभी चाहते हैं कि हमारा देश अच्छा हो, समाज अच्छा हो। इसके लिए सबकी नजर युवाओं पर जाती है। युवा जो चाहें, कर सकते हैं। बस, जरूरत है सही निर्देशन की। इस बात से सभी सहमत हैं कि यदि युवा की शक्ति समाज के अच्छे कार्यों में लगती है तो उन्नति होती है और यदि शक्ति का दुरुपयोग होता है तो पतन भी निश्चित है। दुनिया में जितने भी महान व्यक्ति हुए हैं उन्होंने अपने विवेक और शक्ति को समाज के कल्याण में लगाया, तभी महान बन पाए।

सभी चाहते हैं नवीनता

सभी के अंदर कोई ना कोई विशेषता जरूर होती है। गत काल में कई व्यक्ति अपनी विशेषताओं का प्रयोग समाज-हित में न करके संन्यासी बन गये, जंगलों में चले गये। उनसे जन कल्याण नहीं हो सका। जिनको हमने वोटों से चुन कर गद्दी पर बिठाया उन्होंने सिर्फ अपना सोचा, इससे भी समाज का भला नहीं हो सका। आज हम सभी चाह रहे हैं कि कुछ नया हो। इसके लिए युवा आगे आएँ। अपनी विशेषता को पहचानें, उसे जन कल्याण में लगाकर विशेष बन जाएँ।

कर्म का फल मिलता है दो बार

बापू गाँधी चाहते थे कि भारत में रामराज्य हो लेकिन परमपिता परमात्मा चाहते हैं कि विश्व में रामराज्य हो। इसके लिए क्या हम हनुमान की तरह परमात्मा राम के मददगार बनना चाहेंगे? अगर हम यह सोचते हैं कि अभी तो हम जवान हैं, हम तो मौज-मस्ती करेंगे तो परमात्मा पिता ने हमें जो कर्मों की गुह्य गति बताई है, उसका ध्यान अवश्य रखें। हर कर्म का फल हमें दो बार मिलता है। एक है प्रत्यक्ष और दूसरा है अप्रत्यक्ष। जब हम अच्छा कार्य करते हैं तब हमें खुशी मिलती है और सभी की दुआएँ भी मिलती हैं। यह है प्रत्यक्ष फल। अगर हम बुरा कार्य करते हैं तो सबसे पहले हमारी शान्ति खत्म हो जाती है और सभी की बद्दुआएँ भी मिलती हैं, यह भी तुरन्त मिलने वाला अर्थात् प्रत्यक्ष फल है। परन्तु बाद में (कर्म के पकने पर) भी हमें हर कर्म का फल खाना ही पड़ता है, अच्छे कर्म का अच्छा और बुरे कर्म का बुरा। तब कर्म के फल को खाने के अतिरिक्त हमारे पास कोई विकल्प ही नहीं रह जाता है। गलत कर्म की सजा जेल या फाँसी भी हो सकती है।

करने से पहले सोचें परिणाम के बारे में

भगवान ने हमें बुद्धि दी है इसलिए हम सोच-समझ कर कर्म करें। हमें ऐसे अच्छे कर्म ही करने हैं जो हमें महान बना सकें और ऊँचाइयों तक पहुँचा सकें। किसी भी कर्म का फल हमारे साथ चलता है जन्म बाई जन्म। उदाहरण के लिए, कोई बच्चा पैदा होते ही बीमार है। सवाल है कि उसने ऐसा कौन-सा कर्म कर लिया जो बीमार पैदा हुआ? एक बच्चा तो पैदा होते ही लाखों-करोड़ों का मालिक बन गया और दूसरे को पीने को दूध भी नहीं मिल रहा है। वास्तव में यह पूर्वजन्म के कर्मों का ही फल है। जब हमें कर्मों की गुह्य गति समझ में आ जाती है तब हम हर कर्म करने से पहले उसके परिणाम के बारे में सोचते हैं। इससे हम हमेशा श्रेष्ठ कर्म ही करेंगे और इसी में हमारी भलाई है।

अकेले चले थे परन्तु....

कई बार हम बुरा तो नहीं करते लेकिन अच्छा भी नहीं करते। इससे अमूल्य जीवन की उपयोगिता को घटा कर हम उसे कौड़ियों के भाव गँवा देते हैं। ऐसा हमें नहीं करना है। अगर हम यह सोचते हैं कि मेरे एक के सुधरने से क्या होगा? तो इस प्रश्न के उत्तर में हम इतिहास देख सकते हैं। बहुत-से ऐसे व्यक्ति हुए हैं इतिहास में जो अकेले चले थे परन्तु बाद में बहुत-से अनुयायी पीछे हो लिए। लेकिन, गायन उनका ही होता है जो पहल करते हैं। ❖

प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के

दिव्य बुद्धि के वरदान से विभूषित आदरणीया दादी जानकी जी, हर प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देकर आत्मा को संतोष से भर देती हैं। बुद्धिवानों की बुद्धि बाबा ने उन्हें ऐसी कला प्रदान की है कि वे उलझे कर्मों की गुत्थियाँ सुलझाकर समाधानस्वरूप बना देती हैं। प्रस्तुत हैं भाई-बहनों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के दादी जानकी द्वारा दिये गये उत्तर

– सम्पादक

प्रश्न- दादीजी, आपको क्या-क्या अच्छा लगता है?

उत्तर- संगठन में रूहानी स्नेह का वायुमण्डल खींचता है। यह इतना अच्छा लगता है, जो शब्दों में नहीं कह सकते हैं परन्तु वायब्रेशन से पता चल जाता है। एक मिनट के लिये हरेक अपनी लाइफ को देखे, मैं कितना खुशनसीब हूँ! खुशी पूछनी हो तो मेरे से पूछो। सदा खुश रहना बहुत बड़ी बात है। भगवान के घर में खाते हैं और सारा दिन आपस में शान्ति और खुशी बांटते हैं। मुझे सबको टोली देना बहुत अच्छा लगता है क्योंकि इसी बहाने नज़दीक से दृष्टि द्वारा देखने, मिलने और मुस्कराने का मौका मिलता है। नॉलेजफुल बाबा ने हमें अपने समान मास्टर ज्ञान का सागर, शान्ति का सागर, आनन्द का सागर... बना दिया है। इस बाप का यह भी वण्डर है कि यह माँ भी है, बाप भी है, फिर शिक्षक भी है, सतगुरु भी है, सखा भी है, सब कुछ है। यहाँ तो एक ही समय पर, एक बाप से ही सर्व सम्बन्ध और सर्व प्राप्तियाँ होती हैं। हम ऐसे बाबा को प्यार से याद करें। दुनिया के किसी भी कोने में हों, इस प्राप्ति के वायब्रेशन फैलाएँ तो वे बड़ा अच्छा काम करते हैं।

प्रश्न- दादीजी, आप हरेक से कौन-सा प्रश्न पूछना चाहती हैं?

उत्तर- मैं हरेक से पूछती हूँ कि आपके विकर्म विनाश हो गये हैं? जो समझते हैं, बाबा की याद से हमारे सारे विकर्म विनाश हो गये हैं, वो बताओ। श्रेष्ठ कर्म करने का बहुत अच्छा भाग्य मिला है। बाबा और कोई गलत कार्य होने नहीं देता है। बाबा हमको तो बहुत प्यार करता है, सबको भी प्यार करता है। फरिश्ता बनाने के लिये बाबा कितनी मेहनत कर रहा है। संगम पर फरिश्ते के पाँव धरती पर नहीं होते हैं। सारे चक्र में लौकिक बाप बहुत मिले होंगे परन्तु उन्होंने कभी किसी को फरिश्ता नहीं बनाया, पर पारलौकिक बाप शिवबाबा ने ब्रह्माबाबा को निमित्त बना करके हमको फरिश्ता बनने की ऐसी अच्छी विधि पढ़ाई है जो अभी सभी को यही बनने की धुन लगी पड़ी है। हम मनुष्य से देवता बनेंगे, क्या बड़ी बात है, उसके पहले फरिश्ता बन रहे हैं। क्या आपको अन्दर में फरिश्ता बनने का नशा और खुशी प्रैक्टिकल है? फरिश्ता बनने का अभी भाग्य है।

जब बाबा शरीर में थे तो चाहे कमरे में बैठें या क्लास में बैठें, न्यारे बहुत थे। अभी वतन में बैठे हैं तो कितने न्यारे और प्यारे हैं। बाबा की पलकों में हम, हमारी पलकों में बाबा। मैं कहाँ रहती हूँ? बाबा की पलकों में। ऐसा कोई है जो कहे कि मैं तो पलकों में नहीं रहता हूँ? यह समय बड़ा वैल्युबुल है। बाबा पलकों में बिठाकर राजाई दे रहा है और हम राजयोगी, सहजयोगी हर कार्य में सहयोगी हैं।

प्रश्न- दादी जी, याद से शक्ति कैसे आती है?

उत्तर- मेरे से कई पूछते हैं, याद से शक्ति कैसे पैदा होती है? हम याद करते नहीं हैं, बाबा की याद रहती है क्योंकि बाबा की याद रहने से मन शान्त और तन की कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म करते भी कर्त्ता-पन के भान से फ्री हैं तो शक्ति अपने आप आती है। बाबा अव्यक्त हो करके भी सेवा कर

रहा है, सिखा रहा है। इन कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म करना ही है क्योंकि बाबा ने यज्ञ रचा है। बाबा ने मुख से ज्ञान सुनाया है और हमारे मुख में ब्रह्माभोजन खिलाया है। बाबा ने हम सबको सिम्पल रहने का सैम्पल बनाया है। सदा यही बुद्धि में रहता है कि परमधाम घर में बाबा के साथ जाऊँ, पहले नहीं जाऊँ। यह जो हमारे पूर्वज हैं ना, उन सभी ने त्याग, तपस्या, सेवा की है। त्याग के बिगर तपस्या नहीं होती है। तपस्या का वायब्रेशन बड़ा पॉवरफुल होता है।

प्रश्न- अगर बुद्धि बेहद में नहीं रहे तो क्या-क्या नुकसान हैं?

उत्तर- जो जरा भी कभी नाराज़ होंगे तो वो माला में नहीं आयेंगे। कोई छोटी-मोटी बात में नाराज़ होने से 8 तो क्या, 108 में भी नहीं आ सकेंगे। ऐसी उतराई-चढ़ाई थका देती है, थकना भी एक बीमारी है। तो कभी कोई थकता तो नहीं है ना! मैं कहूँ, मैं थक गई हूँ, मैं क्या करूँ, नहीं। संगमयुग बड़ा वैल्युबुल है, प्रभु मिलन की घड़ियां हैं इसलिये थको नहीं। दाल रोटी खाना, सफेद कपड़े पहनना। बेहद के बाबा ने, बेहद में रहने की बादशाही दी है। अगर बुद्धि बेहद में नहीं है तो हद के किसी न किसी व्यक्ति या वैभव से लगाव-झुकाव में फंस जाती है।

कल क्या होगा, पता नहीं, पर अभी जो करना है वह कर लें। क्या कर लें? सर्वशक्तिवान बाबा से हर पल, हर सेकेण्ड में जो बल मिलता है, वह अपने पास जमा कर लें। जितना योग में रहते हैं तो कनेक्शन से लाइट और रिलेशन से माइट आ जाती है। और आपस में जब मिलते हैं तो बड़ा प्यार पैदा होता है, उस प्यार को कैसे बांटें! बाबा ने अपना बनाकर बिन्दी लगाना सिखा दिया है। मैं आत्मा बिन्दी हूँ, परमात्मा भी बीजरूप है, उसकी हम रचना हैं। बड़ी खुशी की बात है कि कोई बोझ नहीं है, भारीपन नहीं है। बेफिक्र रहने की बादशाही मिली है। भले सारे विश्व में सेवा करने के लिये बाबा ने निमित्त बनाया परन्तु सेवा क्या है? हरेक आत्मा को मुझ आत्मा से क्या सुनना है, मैं कौन हूँ, मेरा कौन है, बस। हरेक का पार्ट एक जैसा नहीं है। बिन्दी तभी लगा सकते हैं जब पहले एक की याद है। हम सब एक के हैं, एक हैं। सारे चक्र में यह दृश्य फिर से देखने को नहीं मिलेगा। बाबा ने सिखाया, खाना है तो क्या, पहनना है तो क्या? तन-मन-धन से तो समर्पण हो गये, अभी हमारे पास क्या है, श्वास-संकल्प-समय के सिवाए और कुछ नहीं।

प्रश्न- मेहनत से मुक्त रहने की युक्ति क्या है?

उत्तर- बाबा कहते, न दु:ख देना, न दु:ख लेना तो क्या देना? सच्चाई से खुश रहना, खुश करना। तो हरेक अपने आपको देखे, हम कितने सच्चे और कितने खुश हैं! पहले-पहले ज्ञान है त्याग का, फिर है तपस्या। त्यागवृत्ति है तो तपस्वीमूर्त और सेवाधारी स्वत: बन जाते हैं। इज़ी है। बहुत मेहनत नहीं है। आदि से लेकर जो बाबा की मुरलियां चली हैं, उनमें मुख्य शिक्षाएँ हैं – सच्चे दिल पर साहेब राज़ी, हिम्मते बच्चे मददे बाप, नियत साफ तो मुराद हासिल, जो संकल्प करो वो हो जाता है। सच्चा दिल है ना तो मेहनत नहीं है। मुझे तो और कुछ काम नहीं है, आप लोग बहुत सेवा करते हो, मैं क्या करूँ? सारे विश्व को शान्ति, प्रेम, खुशी, शक्ति के वायब्रेशन यहाँ से मिलें, यह भावना है।

प्रवृत्ति में रहते हुए कमल फूल समान रहना सहज है। सभी अच्छी तरह से अटेन्शन दे रहे हैं कि भले कितना भी पानी है, कुछ भी है पर छींटा न पड़े। सदा उपराम वृत्ति और न्यारा, तो कितना बाबा का प्यारा बनता है! जितना न्यारा बनेंगे, उतना बाबा का प्यारा बनेंगे। बाबा के प्यार की शक्ति कैसे चलाती है? ऐसी कई आत्माओं को मैं अच्छी तरह से जानती हूँ जिन्होंने न्यारे बनने से बाबा का बहुत प्यार पाया है, अभी तक पा रहे हैं। तो न्यारा माना अपनी देह, देह के सम्बन्धी, दुनिया, सबसे न्यारा। न लगाव है, न झुकाव, न ही कोई टकराव; प्रवृत्ति में रहते हुए सभी खुश हैं। मेरे से सब खुश हैं। मैं भी सबसे खुश हूँ। मुझे और तो कुछ करना नहीं आता है परन्तु खुश रहना और खुशी देना, यह सबसे अच्छा सहज योग है। ज्ञान भी इसमें है और सेवा भी इसमें है। ❖

जड़ चीज़ों में ख़ुशी की अनुभूति नहीं है

ब्रह्माकुमारी शिवानी बहन, गुरुग्राम (हरियाणा)

विज्ञापन कम्पनियाँ हमारी भावनाओं को बहुत अच्छी तरह से प्रयोग करती हैं, साथ ही साथ वे बहुत अच्छी मनोवैज्ञानिक भी हैं। जो भी विज्ञापन वे बनाती हैं, उसमें दिखाती हैं कि आप जब इस वस्तु को खरीदेंगे तब आपके दोस्त आपसे खुश हो जायेंगे, आपके बच्चे आपसे खुश हो जायेंगे या आपका रूठा हुआ पति आपसे खुश हो जायेगा और हमारी मानसिक अवस्था ऐसी होती है कि हम तुरंत ही उस विज्ञापन से प्रभावित होकर उस चीज को खरीदने के लिए प्रेरित हो जाते हैं।

हम चीजों को इकट्ठा करने में लगे हुए हैं, जो शरीर के सुख के हिसाब से तो अच्छी हैं लेकिन हमें यह याद रखना चाहिए कि ये हमें खुशी नहीं देंगी। दूसरा, मैंने ये सोचा कि जब मैं ये चीजें खरीद लूँगी तो मेरा परिवार खुश हो जायेगा लेकिन एक बार हमें रुक कर यह चेक करना पड़ेगा कि आजकल उनकी खुशी का स्तर क्या है, खासकर बच्चों का। बच्चे कितने दर्द में हैं आज! हम रोज शाम को घर आते समय उनके लिए कोई खिलौना, कोई विडियो गेम आदि ले आते हैं और सोचते हैं कि ये खुश हो जायेंगे।

वे शिकायत करते हैं, आज मेरे स्कूल में कार्यक्रम था, आप क्यों नहीं आये? मैं उनको खुश करने के लिए एक खिलौना या कोई अन्य सामान लाकर दे देती हूँ। वो उस बात को भूल गये और खेलने में व्यस्त हो गये। हमें लगा कि हमने उनको खुशी दे दी। हमने उनको थोड़ी देर के लिए खुशी दी लेकिन इससे हमने उनको और ही उस रास्ते से हटा दिया जिससे वे स्वयं खुशी पैदा कर सकते थे। उनको तो इसकी आदत पड़ जायेगी और वे यही समझेंगे कि जितनी ये चीजें उनके पास आती जायेंगी, खुशी मिलती जाएगी। फिर हम अगले दिन कहते हैं कि इनकी तो डिमांड ही खत्म नहीं होती है, हर रोज नयी चीज की मांग करते हैं। प्रश्न उठता है कि बच्चों को ऐसा किसने सिखाया? हमने ही तो सिखाया। हमारा उद्देश्य, हमारा व्यवहार उनके प्रति बहुत शुद्ध है लेकिन हमें यह याद रखना पड़ेगा कि उनको खुश करने का हमने जो तरीका चुना वो गलत है।

मैं खुद को खुशी देने के लिए साड़ी खरीदकर लाऊँगी या एक नयी पोशाक खरीदकर लाऊँगी। हमें यह समझना पड़ेगा कि साड़ी के पास अनुभूति थोड़े ही है देने के लिए जो वह अच्छा अनुभव करायेगी। हमें अच्छी लगी तब हमने वो खरीदी। फिर चार लोग ऐसे जरूर मिलेंगे जो पूछेंगे कि ये साड़ी कहाँ से ली, बहुत अच्छी लग रही है, इससे खुशी मिलती है। साड़ी तो इस प्रकरण में कुछ भी नहीं कर रही है, जिसके पास कोई फीलिंग नहीं है आपको देने के लिए वो हमें खुशी कहाँ से देगी?

अब चार लोगों के बाद पाँचवें व्यक्ति ने आकर कह दिया कि ये कलर अच्छा नहीं लग रहा है, आपने ये साड़ी कहाँ से खरीदी? साड़ी वहीं कि वहीं है लेकिन हमारा सोचने का ढंग बदल गया, जिसके कारण हमारी अनुभूति भी बदल गयी। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि साड़ी कोई अनुभूति पैदा नहीं कर रही है बल्कि इसे 'मैं' पैदा कर रही हूँ। पहले मैंने साड़ी खरीदी या गाड़ी खरीदी या नया मोबाइल जो लांच हुआ वो खरीदा। पहले मैं उसके लिए एक अच्छी सोच पैदा करती हूँ कि यह खुशी देगा। तब मुझे वैसी ही अनुभूति होती है। अगर इसके विपरीत, मैं सोचूँ कि मैं उस 'वस्तु' को खरीदने में सक्षम नहीं हूँ तो उस 'वस्तु' को खरीद न पाने की जो सोच चलती है वह मुझे कहीं न कहीं दुख की अनुभूति कराती है कि मेरे आस-पास के सभी लोगों ने खरीद लिया, एक मैं ही हूँ जो इसे नहीं खरीद पायी।

मान लो कि बाजार में एक नया मोबाइल आया है जो बीस हजार रुपये का है लेकिन मेरा जो मोबाइल है वो तो वही पुराना वाला है, उसमें वो गाने नहीं बजते हैं, उसमें जो विशेषताएँ चाहिएँ वो नहीं हैं। ऐसे में नया मोबाइल हमें खुशी नहीं दे रहा है लेकिन ये विचार कि सबके पास है, मेरे पास

नहीं है, उस वस्तु को खरीदने की प्रेरणा दे रहा है। हम अपनी इस खुशी को सभी के साथ बाँटते हैं लेकिन मोबाइल क्या कर रहा है? उसके पास फीलिंग कहाँ हैं शक्ति संचार करने की? लेकिन मैं वो मोबाइल खरीदने के बाद खुशी वाली अस्थायी सोच निर्मित करती हूँ जिसके कारण मुझे लगता है कि मोबाइल मुझे खुशी दे रहा है। ❖

खूबसूरत जिन्दगी का राज – राजयोग

ब्रह्माकुमार सत्यम, रादौर (हरियाणा)

सचमुच खूबसूरती वहाँ होती है जहाँ संतुलन हो। बगीचा भी वही खूबसूरत लगता है जिसमें रंग-बिरंगे फूल हों। डॉक्टर भी स्वस्थ रहने के लिए संतुलित भोजन लेने की सलाह देता है। ठीक उसी प्रकार जिन्दगी भी तभी खूबसूरत व आनन्ददायक लगती है जब उसमें भौतिकता व आध्यात्मिकता का संतुलन हो। जहाँ जीवन में अच्छे विद्यालय में पढ़ना, ऊँचे पद पर आसीन होना, साधन-सुविधाएँ जुटाना, पारिवारिक सम्बन्धों को निभाना, अच्छा स्वास्थ्य, खेल, मनोरंजन आदि सभी आवश्यक हैं वहीं आध्यात्मिकता भी परम आवश्यक है।

सच तो यह है कि आध्यात्मिकता वह गुलाब का फूल है, जो बगीचे (जिन्दगी रूपी) में खिले सभी फूलों की शोभा को दुगुना कर देता है। क्या हम नहीं चाहते कि बच्चे विद्यालय में पढ़ाई के साथ-साथ स्वयं को व परमपिता परमात्मा को भी जानें, ऊँचे पद पर आसीन होने के साथ-साथ संस्कारों में भी ऊँचे हों, घर में साधन-सुविधाओं के साथ-साथ सुख भी हो, पारिवारिक सम्बन्धों में मधुरता व प्यार हो, शरीर की स्वच्छता के साथ-साथ मन भी सर्व बुराइयों से मुक्त हो – इन्हीं सब चाहनाओं को पूरा करता है मेडिटेशन।

इस सत्य से हम इन्कार नहीं कर सकते कि आज उच्च पदासीन लोग और उनके साधन-सुविधाएँ, खेल, मनोरंजन आदि सब बढ़ रहे हैं पर क्या सुख, शान्ति, प्यार, नैतिक मूल्य, संस्कार, सम्बन्धों में मिठास, स्वास्थ्य भी बढ़ रहे हैं? नहीं न। क्यों हो रहा है ऐसा? क्योंकि ये सब आध्यात्मिकता को अपनाने से मिलती हैं पर आध्यात्मिकता की ओर जाने का न तो हम समय निकालते हैं और न ही उसे धारण करने का प्रयास करना चाहते हैं।

मैं पिछले आठ वर्षों से प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में 'राजयोग' की शिक्षा ले रहा हूँ। मुझे तो कभी भी यह नहीं कहा गया कि आप अपने विद्यालय, माता-पिता, परिवार, खेल या दोस्तों को छोड़ो। बस, चौबिस घण्टे में से मात्र एक घण्टा इस विद्यालय में पढ़ना तथा हर कार्य को परमपिता परमात्मा की याद में रहकर करने की शिक्षा दी गई है। यकीन मानिए, जिन्दगी बेहद खूबसूरत हो गई है।

दिल करता है कि मेरे सभी मित्र, उनके माता-पिता और अन्य सभी का जीवन इतना ही खूबसूरत बन जाये। कोई बोझ नहीं लगा। हर वक्त अन्दर खुशी रहती है। विद्यालय का गृहकार्य भी आधे समय में हो जाता है। खेल व दोस्तों के लिए पर्याप्त समय मिलता है। परिवार के सभी सदस्य मुझसे खुश हैं, सन्तुष्ट हैं, उनसे बेहद स्नेह मिलता रहता है। माता-पिता का दुलार व शिक्षकों की दुआएँ आगे बढ़ा रही हैं। आध्यात्मिकता को जीवन में लाने से कुछ छोड़ना तो नहीं पड़ा पर मिला बहुत कुछ जैसे कि बेहद का परिवार, परमपिता का साथ तथा अच्छे गुण।

हमें करना ही क्या है? बस, अपनी परम आवश्यक (पढ़ना, नहाना, भोजन, सोना, नौकरी इत्यादि) की लिस्ट में आध्यात्मिकता को भी शामिल करना है। सच तो यह है कि जब हम आध्यात्मिकता के लिए समय निकालते हैं तो वह समय निकालना नहीं अपितु समय बचाना होता है। जब हम एक घण्टा देने लगेंगे तो स्वयं ही अनुभव करेंगे कि हमारा प्रत्येक कार्य आधे समय में और पहले से कई गुणा अच्छा होता है। जिन्दगी हमारी है और इसे खूबसूरत भी हमें ही बनाना है। ❖

महिला सशक्तिकरण

ब्रह्माकुमार नरेश, मुजफ्फरनगर

सरकार के द्वारा महिला सशक्तिकरण की राष्ट्रीय नीति 20 मार्च, 2001 को लागू की गई थी। तब से समय प्रति समय इस हेतु विभिन्न स्तरों पर सेमिनार, सभाएं, गोष्ठियाँ आदि होती रही हैं। महिला सशक्तिकरण अर्थात् महिलाओं के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक व धार्मिक अधिकारों को पुरुषों के बराबर न्यायिक स्तर पर लाना। यह तब संभव हो जब स्त्री-पुरुष में हो रहे भेदभाव को मिटा दिया जाए और महिला-सशक्तिकरण केवल सभाओं व गोष्ठियों में चर्चा का विषय बन कर न रह जाए बल्कि इसका कार्यान्वयन आचरण के धरातल पर दैनिक क्रिया-कलापों में भी होने लगे। आश्चर्य है कि भारत में 95 प्रतिशत महिलाओं को अपने संवैधानिक अधिकारों का ज्ञान ही नहीं है।

अधिकार ज्यादा रखता कर्त्तव्यपरायण कम रहता

संविधान हर महिला को उसके अधिकार देने का उसी प्रकार से वचन देता है जिस प्रकार रिजर्व बैंक का गवर्नर करन्सी नोट पर हर धारक को मूल्य-अदायगी का वचन देता है। सभी 100 रुपये के नोटों पर गवर्नर की तरफ से लिखा होता है कि मैं धारक को एक सौ रुपये अदा करने का वचन देता हूँ। कागजी नोटों में गति भी है और शेर जैसी चपलता व शक्ति भी परन्तु महिलाओं के अधिकारों के परिप्रेक्ष्य में संविधान कागजी शेर होकर रह गया है क्योंकि यह उनकी रक्षा नहीं कर पा रहा है। भारत का संविधान 26 जनवरी, 1950 को लागू हुआ और तीन शेरों वाली सरकारी सील (Emblem) पहली बार इस संविधान पुस्तिका पर मुद्रित की गई। यही सील सभी करन्सी नोटों पर भी छपी होती है। परन्तु संविधान की उपेक्षा हो रही है और करन्सी नोटों की कद्र। इन शेरों के नीचे बना अशोक-चक्र अब नैतिक मूल्यों व आध्यात्मिक ज्ञान के अभाव में शोक-चक्र होकर रह गया है। जहाँ शोक है, वहाँ आत्मिक-शक्तियाँ नहीं। संवैधानिक अधिकार उसी महिला को मिलता है जिसे इसका ज्ञान हो और जो अपने हक की मांग करे। विवाहोपरान्त पति द्वारा पत्नी की मांग भरना मात्र सिन्दूर भरना नहीं है बल्कि पूरे जीवन उसकी हर वैध मांग (अधिकार) को पूरा करना भी है। नारी अपने वैवाहिक कर्त्तव्यों का निर्वाह करे और फिर भी उसके संवैधानिक अधिकारों का हनन हो, तो यह उसके साथ अन्याय है। सरकार चाहती है कि नागरिक अपने कर्त्तव्यों का पालन करें और नागरिक चाहते हैं कि सरकार उनके अधिकारों की रक्षा करे। आज पुरुष अधिकार ज्यादा रखता है और कर्त्तव्यपरायण कम रहता है। दूसरी ओर, वह महिलाओं को अधिकार कम देता है और उन्हें कर्त्तव्यों पर ज्यादा चलाता है। इसी विसंगति के कारण महिला सशक्तिकरण की आवाज पैदा हुई है।

संविधान का अनुच्छेद 14

भारत की आजादी के बाद जब संविधान का प्रारूप बनाया जाने लगा, तब इस बात का विशेष ध्यान रखा गया कि संविधान में स्त्री और पुरुष, दोनों को समान अधिकार दिए जायें। संविधान ने महिलाओं को शिक्षा, खेलकूद, सूचना व प्रसारण, राजनीति, आर्ट एवं कल्चर आदि के

क्षेत्र में अपनी प्रतिभा दिखाने का पूरा मौका दिया। परन्तु कई रीति-रिवाजों व पारिवारिक परम्पराओं व मान्यताओं ने महिलाओं को खुल कर आगे आने नहीं दिया और संविधान-प्रदत्त मौकों का सीमित लाभ ही लिया जा सका। भारत के संविधान के अनुच्छेद 14 के अन्तर्गत महिलाओं को समानता का अधिकार मिला और इसे कानूनन अनिवार्य बनाया गया। अनुच्छेद 39 (d) के तहत समान कार्य के लिए महिलाओं को समान वेतन (Equal pay for equal Work) दिये जाने का प्रावधान है। अनुच्छेद 42 के अन्तर्गत महिलाओं को मातृत्व-अवकाश (Maternity Leave) दिये जाने का नियम है। अब यह अवकाश बढ़ा कर छः मास तक कर दिया गया है। दहेज निषेध अधिनियम (Dowry Prohibiton Act-1961) के द्वारा दहेज मांगने व दहेज देने पर सजा दिये जाने का प्रावधान है। कार्यस्थलों पर बढ़ते यौन अपराधों की रोकथाम के लिए यौन-उत्पीड़न अधिनियम-2013 (Sexual Harrassment of women at Workplace - Prevention, Prohibition and Redressal Act, 2013) के द्वारा महिलाओं को सुरक्षा प्रदान की गयी है।

महिला की उन्नति से देश की उन्नति

उपरोक्त संवैधानिक उपायों के अशक्तिकरण या अप्रभावी होने पर महिला सशक्तिकरण की आवाजें उठने लगीं। आज सशक्तिकरण मात्र एक शब्द हो कर रह गया है और इसमें निहित भाव को समझा नहीं जा रहा है। सशक्तिकरण अर्थात् नारी के गुण, शक्ति, ज्ञान व अनुभव का फायदा उसे भी मिले और समाज को भी मिले और इनकी अभिव्यक्ति हेतु अनुकूल माहौल व स्वतंत्रता नारी को प्राप्त हो। दूसरे शब्दों में, नारी को अपनी आन्तरिक क्षमताओं, प्रतिभाओं व शक्तियों के प्रयोग की पूरी स्वतंत्रता हो, बिल्कुल उतनी ही, जितनी की आज पुरुषों को प्राप्त है। उसे अपने फैसले लेने का अधिकार हो। पी. के. बी. नायर के अनुसार, सशक्तिकरण अर्थात् नारी को पुरुष के बराबर समान अधिकार व स्वतंत्रता प्रदान किया जाना या लिंग-भेद को अधिक से अधिक कम किया जाना। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री स्व. जवाहरलाल नेहरू ने कहा था कि जब महिलाएं आगे बढ़ती हैं तो परिवार आगे बढ़ते हैं, गांव आगे बढ़ते हैं और समग्रता में देश आगे बढ़ता है। महिलाओं को मिले रोजगार से उनकी आर्थिक दशा सुधरती है, वह आश्रित न होकर आत्मनिर्भर बनती है, उसका सामाजिक कद बढ़ता है, वह आर्थिक व वैचारिक स्तर पर सशक्त बनती है। आर्थिक सशक्तिकरण से देश का सकल घरेलू उत्पाद (G D P) बढ़ता है जिससे देश की विकास दर बढ़ती है और वैचारिक सशक्तिकरण से देश का चरित्र व संस्कृति सुधरती है।

पुरुष सशक्तिकरण अर्थात् नारी के प्रति क्षुद्र मानसिकता का त्याग

प्रश्न उठता है कि क्या वास्तव में महिलाएं अशक्त व दुर्बल हो गई हैं या यह पुरुष है जो विभिन्न आसक्तियों व झूठे दंभ के कारण महिलाओं पर मनमानी करता है? महिलाएं यदि शान्ति बनाए रखने के लिए पुरुषों की मनमानी को सहन करती हैं, तो उनकी यह सहनशक्ति दुर्बलता का प्रतीक है या शक्ति का प्रतीक है? सहन करना दुर्बलता का प्रतीक नहीं है, इसलिए ही इसे सहन-शक्ति कहा जाता है। तो नारी के सशक्तिकरण की आवश्यकता है क्या? क्या महिलाओं के द्वारा पुरुषों का विरोध करना ही उन्हें सशक्त बनायेगा? यदि ऐसा होता, तो घर-घर में पति-पत्नी में चल रहे फसाद का कारण तो उस पत्नी का सशक्त होना ही माना जाता। क्लेश से भरे किसी घर की गृहिणी जब ईश्वरीय ज्ञान को प्राप्त कर पति से विवाद करना बंद कर देती है और पति के विरोध करने पर भी ईश्वरीय महावाक्यों को सुनने प्रतिदिन आश्रम जाने लगती है, तो उस नारी का यह परिवर्तन उसका सशक्तिकरण कहा जायेगा या नहीं? फिर धीरे-धीरे वह अपने कुसंस्कारी व विरोधी पति पर अपने शान्त व संयमित व्यवहार की छाप छोड़ती है और एक दिन

उसका पति भी उसके संग आश्रम जाता है और पूरा पारिवारिक परिवेश ही शान्त-सुखद हो जाता है, तो इसे महिला सशक्तिकरण की मिसाल माना जाए या नहीं? यदि नारी के प्रति पुरुष अपनी क्षुद्र मानसिकता व नकारात्मकता को त्यागे तो इसे उस पुरुष का सशक्तिकरण कहा जा सकता है।

'मैं' नहीं, 'हम'

अभी नारी को लौकिक पहचान व नर जैसी समग्राह्यता (As Acceptable as Male) की तलाश है जोकि पुरुष के अहम् (Ego) के कारण मिल नहीं पा रही है। यदि नारी अपनी आत्मिक पहचान व गुणग्राह्यता को पा ले तो पुरुष का अहम् (मैं ही सब कुछ) बदल कर हम (मैं और तुम, दोनों एक समान) का भाव धारण कर लेगा।

नारी को दूसरे दर्जे की मानने की मानसिकता

इसमें दो राय नहीं है कि आजादी के बाद भारत में महिलाओं की दशा में उल्लेखनीय सुधार हुआ है। पड़ोसी मुल्कों (पाकिस्तान, बंगलादेश) की महिलाओं की तुलना में भारत की महिलाओं की स्थिति काफी बेहतर पाई जाती है। फिर भी इसे संतोषप्रद नहीं माना जा सकता क्योंकि आज भी महिलाओं पर हो रहे अत्याचारों की खबरें आती रहती हैं, जिसका मूल कारण यह है कि कई पीढ़ियों से पुरुष-वर्ग की मानसिकता अपने को श्रेष्ठ व नारी को दूसरे दर्जे की मानने की हो गई है। कई सामाजिक बुराइयां जैसे कि दहेज-प्रथा, कन्या-भ्रूण हत्या, विधवा को हीन दृष्टि से देखना, वेश्यावृत्ति आदि ने महिलाओं को पुरुषों के बराबर संवैधानिक अधिकारों की प्राप्ति से वंचित किया है। लिंग-भेदभाव के विश्वव्यापी आकलन में भारत की महिलाओं की स्थिति अभी भी असंतोषप्रद है। जब महिला सशक्तिकरण का मुद्दा चर्चा में आता है तब बातें तो काफी प्रेरणादायक की जाती हैं, फैसले भी लिये जाते हैं, भेदभाव मिटाने की शपथें भी खाई जाती हैं परन्तु इनका वास्तविक कार्यान्वयन किये जाने में अन्तर आ जाता है।

क्रमशः

शिवबाबा का धन्धा भरपूर

ब्रह्माकुमार निर्विकार नरायण श्रीवास्तव,
मिश्रिख तीर्थ (उ.प्र.)

शिवबाबा का जो है धन्धा, वो धन्धा भरपूर।
बाकी जितने भी धन्धे हैं, सब धन्धों में धूर।।

परमपिता शिव आकरके अब सबको ज्ञान सुनाते हैं।
राजयोग की शिक्षा देकर जीवन सुखी बनाते हैं।
कलियुग जाने वाला, इसका समय हुआ है पूर।
शिवबाबा का जो है धन्धा, वो धन्धा भरपूर।।

शिवबाबा संगम की वेला सबको शिक्षा देते हैं।
पाँच विकार दान में दे दो, यह भिक्षा ही लेते हैं।
कामशत्रु को लात मार कर, इसे भगा दो दूर।
शिवबाबा का जो है धन्धा, वो धन्धा भरपूर।।

द्वापर के आते ही सबकी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है।
दिव्य गुणों का पतन हुआ, शक्तियाँ सभी खो जाती हैं।
देहभान के नशे में रहते, हरदम हम तो चूर।
शिवबाबा का जो है धन्धा, वो धन्धा भरपूर।।

परमपिता शिव अपना परिचय, ब्रह्मा मुख से देते हैं।
प्रेम, दया और सुख के सागर, ब्रह्म निवास बताते हैं।
नाम हमारा परमपिता शिव, रूप अनोखा नूर।
शिवबाबा का जो है धन्धा, वो धन्धा भरपूर।।
बाकी जितने भी धन्धे हैं, सब धन्धों में धूर।।

आवश्यकता है

ग्लोबल अस्पताल माउन्ट आबू तथा आबू रोड में निम्नलिखित सेवाओं (Job) के लिए भाई-बहनों की आवश्यकता है –
ऑडियोलोजिस्ट एवं स्पीच थैरापिस्ट – BASLP
स्टाफ नर्स – GNM/B.Sc.(Nursing)
फार्मासिस्ट – D.Pharma
लैब टेक्निशियन – DMLT/B.Sc.MLT
आयु सीमा न्यूनतम 20 और अधिकतम 35 वर्ष
उचित वेतन सुविधा, संपर्क करें – 9414144062
(सुबह 9 बजे से 5 बजे के बीच)
ई-मेल – ghrchrd@ymail.com

जीवन परिवर्तन के लिए
बाबा का आभार

ब्रह्माकुमार महेश चांदिलकर, येरवडा जेल, पुणे

मैं पारिवारिक केस में जेल में आया हूँ। जब से यहाँ आया, तब से मन में बेचैनी, घबराहट, डिप्रेशन बढ़ता गया। सच कहूँ तो मैंने शरीर-हत्या का भी प्रयास किया था लेकिन ड्रामा में कुछ और ही था इसलिए सफल नहीं हो पाया। ऐसे ही दिन काटता रहा, सोचता रहा, भगवान कुछ ना कुछ अच्छा ही करेंगे।

जीवन के अनमोल दिन

सन् 2016 में एक दिन सभी कैदी भाइयों के लिये ब्रह्माकुमारीज की ओर से कार्यक्रम रखा गया था। मैं उस दिन नहीं गया, मेरे कुछ दोस्त वहाँ जाने लगे। मैं भी जाना चाहता था लेकिन 'जाऊँ, ना जाऊँ' इस दुविधा में चार दिन निकल गये। पाँचवें दिन वहाँ गया। कुछ देर बाद वहाँ सफेद वस्त्रधारी दो दिव्य बहनें और एक भाई का आगमन हुआ। उन दिव्य भाई-बहनों ने तीन दिन ज्ञान का कोर्स कराया। ये तीन दिन मेरे लिए बहुत अनमोल थे। तभी से मैं रोज मुरली सुनने जाने लगा। मुरली सुनने से मुझे सुकून महसूस हुआ। इतना आनंद मुझे पहले कभी नहीं आया था। तभी से मैं शिवबाबा की श्रीमत पर चल पड़ा। इसके बाद मेरे केस में अच्छे से अच्छे नतीजे आने लगे। मेरे दो भाइयों की जमानत हो गई। जो नहीं हो सकता था, वह हो गया। बाबा कहते हैं, मीठे बच्चे, मेरी याद में रहो तो मैं सब कुछ ठीक कर दूँगा। दो भाइयों के घर जाने से परिवार अब आनंदमय जीवन बिता रहा है। मुझे भी अनुभूति होती है कि मैं बहुत जल्दी बाहर आने वाला हूँ।

खोज हुई पूरी

जब मैं भक्ति मार्ग में था तब भजन, कीर्तन, पूजा, पाठ करता था। भगवान को पाने की बहुत आस लगी थी। जेल में साढ़े तीन साल मेरे ऐसे ही गये। भगवान को रोज कहता था, यहाँ से जाने के बाद सब कुछ छोड़ संन्यास मार्ग अपना लूँगा पर बाबा का चमत्कार देखो, जिसे भक्ति मार्ग में हम सब ढूँढ़ते हैं उसी परमपिता परमात्मा शिवबाबा ने मुझे जेल में ढूँढ़ लिया। अब मेरी खोज पूरी हो गई, अब कुछ भी नहीं चाहिये। मन में अब यही गीत बजता रहता है, पाना था जिन्हें अब पा लिया, रही ना बाकी कोई आस है...।

स्वभाव में परिवर्तन

ज्ञान में आने से पहले मेरा स्वभाव बहुत चिड़चिड़ा था। गुस्सा बहुत आता था। नकारात्मक सोच और अहंकार को साथ ही लेकर चलता था। कई बार झगड़ा होता था फिर पश्चाताप करता था। जब से मुरली सुन रहा हूँ, बाबा की याद में रहता हूँ, तब से मुझ में बहुत परिवर्तन हुआ है। मैं अब पूरा राज़ समझ चुका हूँ। अब सबसे बहुत प्यार से बात करता हूँ, वाणी बहुत मधुर हो गई है। बाबा ने मुझ में बहुत परिवर्तन किया है। बाबा ने मुझे सहनशीलता, धैर्य, नम्रता, पवित्रता, परोपकार, मधुरता, हर्षितमुखता – इन सब दिव्य गुणों से सजाया है। बाबा की याद में मेरे सभी काम जल्दी और बिना कष्ट के होते हैं।

अमृतवेले का अनुभव शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता। अब ऐसा महसूस करता हूँ, मैं जेल में नहीं बल्कि आश्रम में हूँ। रोज मुरली पढ़ना, बाबा की याद में रहना, इसमें मुझे परमानंद मिलता है। इस परमानंद के सामने दुनिया का कोई भी आनंद फीका है। मैं अब अपार खुशी में रहता हूँ। इस परिवर्तन के लिए मैं प्यारे शिवबाबा का आभार मानता हूँ। अब मेरे मन से यही शब्द निकलते हैं, मेरे बाबा, प्यारे बाबा, मीठे बाबा।

जेल प्रशासन का सहयोग

इस अलौकिक कार्य में जेल प्रशासन ने बहुत सहयोग

दिया है। इसके लिए मैं और ज्ञान सुनने वाले सभी बन्दी भाई, जेल प्रशासन का आभार मानते हैं। हमें रोज मुरली सुनाने वाले दिव्य भाई का भी आभार है। अब हर घड़ी यही लगता है कि शिव बाबा साथ है, तो डरने की क्या बात है। ❖

खुशनुमा जीवन के तीन मूल मंत्र

ब्रह्माकुमारी सोनिया, जीन्द (हरियाणा)

पहाड़ जैसी बात को रूई समान बनाने के लिए दुआओं का खाता जमा करना है। दुआ और बद्दुआ ऐसी चीजें हैं जो दिखती नहीं है परन्तु लगती जरूर हैं। उदाहरण के लिए हम देखते हैं कि कई व्यक्ति छोटे-छोटे कार्यों में, विघ्नों में घबरा जाते हैं और कई व्यक्ति बड़ी-बड़ी परिस्थितियों को भी सहज पार कर लेते हैं। कारण है आत्मविश्वास की कमी या आत्मविश्वास की वृद्धि। आत्मविश्वास बनता है दुआओं से और दुआएँ मिलती हैं सभी के साथ सच्चा रहने से। दुआएँ प्राप्त करने के लिए और आत्मविश्वास को बढ़ाने के लिए निम्नलिखित तीन मूल मंत्रों को जरूर प्रयोग में लाएँ।

कृपया

कृपया शब्द जब प्रयोग में लाया जाता है तो खुशी प्रदान करता है। जब भी हमें किसी से कुछ काम कहना है,चाहे वो छोटा हो या बड़ा, तो नम्रता से ही बोलें, जैसे, कृपया आप मुझे एक कप चाय देंगे? इस मंत्र से काम बनने के 80 प्रतिशत चांस बढ़ जाते हैं। दूसरा व्यक्ति तन के साथ-साथ मन से भी हमसे जुड़ जाता है। नहीं तो व्यक्ति यदि तन से हमारे साथ हो पर मन से न हो, तो काम बनाने के बजाय बिगाड़ देता है। यह सच है कि व्यक्ति जब मन से काम करता है तो ज्यादा से ज्यादा सफलता मिलती है। मन में उमंग, उत्साह व खुशी बनी रहती है। सामने वाला व्यक्ति मूड न होने पर भी 'कृपया' शब्द सुनकर अपनी शुभ भावनाओं के साथ हमारा सहयोगी बन जाता है।

धन्यवाद

आज हम देखते हैं कि स्कूलों में छोटे-छोटे बच्चों को भी ये बातें जरूर सिखाई जाती हैं कि जब आपको कोई चीज दे, आपकी मदद करे, तो उसको शुक्रिया या धन्यवाद बोलें। अगर बच्चा नहीं बोलता तो हम बार-बार कहते हैं, बेटा धन्यवाद बोलो। हम अपने से पूछें, हम ऐसा करते हैं क्या? धन्यवाद बोलने से सामने वाला बहुत खुश हो जाता है। हम देखते हैं कि घर में पत्नी सारा दिन कितना भी काम करे या पति कितना भी थका-हारा घर आये लेकिन कोई किसी का धन्यवाद नहीं करता। फिर बच्चे भी माता-पिता से यही सीखते हैं। हमें अपने अंदर से देह अभिमान को खत्म करना पड़ेगा। तभी हम एक-दो के सहयोगी बनकर आपस में धन्यवाद का प्रयोग कर सकते हैं। धन्यवाद कहना माना दुआ देना और दुआ लेना। इसलिए धन्यवाद बोलने की अपनी एक आदत बना लें।

गलती महसूस करना

जब हम से कोई गलती हो जाये और हम 'गलती हो गई (Sorry)' यह कहते हैं तो पता चलता है कि हमने अपनी गलती को महसूस किया। दोबारा वह गलती ना हो, यह भी पक्का करते हैं। ऐसा कहने से सामने वाला भी शांत हो जाता है और हम भी अंदर से हल्के हो जाते हैं। कहा भी जाता है, गलती इंसान से ही होती है लेकिन महान वो है जो गलती करने के बाद उसको स्वीकार कर ले। गलती स्वीकार करने से दोबारा उस गलती को न करने के चांस बढ़ जाते हैं। गलती छुपाने से और भी ज्यादा गलतियाँ होती हैं। गलती किसी से भी हो, चाहे छोटा या बड़ा, गलती स्वीकार जरूर करनी चाहिए। इससे हमारे संबंध भी मधुर बन जाते हैं। ❖

श्रम दिवस पर विशेष

तोड़ो, व्यसनों की कारा तोड़ो

ब्रह्माकुमारी उर्मिला, संयुक्त संपादिका

अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस को अन्तर्राष्ट्रीय कर्मचारी दिवस भी कहते हैं। इसे मई दिवस, कामगार दिवस, श्रम दिवस, श्रमिक दिवस आदि नामों से भी जाना जाता है। धूप में, गर्मी में, कठिन प्राकृतिक परिस्थितियों में काम करने वाले को हम मजदूर समझते हैं परन्तु इस शब्द का दायरा बहुत विशाल है। मजदूर वर्ग में वे सभी लोग आते हैं जो किसी संस्था या निजी तौर पर किसी के लिए काम करते हैं और बदले में मेहनताना लेते हैं। शारीरिक व मानसिक रूप से मेहनत करने वाला हर इन्सान मजदूर है, फिर चाहे वह ईंट-सीमेंट से सना हो या ए.सी.कार्यालय में फाइल के बोझ तले बैठा कर्मचारी हो।

श्रमिक दिवस – संक्षिप्त इतिहास

पुराने जमाने में मजदूर और कामगार वर्ग की स्थिति अत्यन्त दयनीय थी। उनसे दिन में 12 से 15 घन्टे तक काम कराया जाता था। कार्यस्थल इतने विषम और प्रतिकूल होते थे कि आए दिन मजदूरों की अकस्मात मृत्यु की घटनाएँ होती रहती थी। इन परिस्थितियों के चलते अमेरिका में मजदूर समस्या निवारण संघ तथा समाजवादी संघ द्वारा मजदूरों के कल्याण के लिए आवाज उठाई जाने लगी।

अन्तर्राष्ट्रीय श्रम दिवस को पीटर एम.सी.गुइर (Peter Mc Guire), जो कि एक कारपेन्टर और यूनियन लीडर थे, का ब्रेन चाइल्ड माना जाता है और इस दिन को मनाने की शुरूआत एक मई, 1886 से मानी जाती है। उस समय अमेरिका की मजदूर यूनियनों ने दैनिक मजदूरी कार्य के समय को 8 घण्टे से ज्यादा न रखे जाने के लिए जबरदस्त मांग उठाई और 13000 छोटे-बड़े उद्योग-धन्धों से जुड़े असंख्य कामगार एक साथ हड़ताल पर चले गए। इसी हड़ताल के दौरान शिकागो की 'हेय मार्केट' में बम धमाका हो गया। बम किसने फेंका था, पता नहीं परन्तु पुलिस ने गोली चला दी और 7 मजदूर मारे गए। मजदूर वर्ग की समस्या से जुड़ी इस घटना ने समग्र विश्व का ध्यान अपनी ओर खींचा था। कुछ समय बाद अमेरिका में 8 घन्टे काम करने का समय निश्चित कर दिया गया था। इसके बाद सन् 1889 में अन्तर्राष्ट्रीय समाजवादी सम्मेलन में एलान किया गया कि हेय मार्केट नरसंहार में मारे गए निर्दोष लोगों की याद में एक मई को अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस के रूप में मनाया जाएगा और इस दिन सभी कामगारों का अवकाश रहेगा। वर्तमान समय भारत तथा अन्य देशों के मजदूरों के लिए 8 घन्टे काम करने से सम्बन्धित कानून लागू है।

भारत में श्रम दिवस सबसे पहले चेन्नई में एक मई, 1923 को मनाना शुरू किया गया था। इसकी शुरूआत भारतीय मजदूर-किसान पार्टी के नेता कामरेड सिंगरावेलू चेट्यार ने की थी। उस दिन मद्रास हाईकोर्ट के सामने कामगारों का जबरदस्त आंदोलन हुआ और यह सहमति बनाई गई कि इस दिवस को भारत में भी कामगार दिवस के तौर पर मनाया जाए और इस दिन छुट्टी का भी एलान किया जाए। भारत सहित 80 देशों में यह दिवस पहली मई को ही मनाया जाता है।महात्मा गांधी मानते थे कि देश का विकास दक्ष कामगारों और किसानों पर निर्भर करता है इसलिए उद्योगपति, मिल मालिक और प्रबन्धक स्वयं को 'मालिक' नहीं, 'न्यासी (Trustee)' ही समझें।

'भाई लालो दिवस'

गुरुनानक देव जी ने किसानों, मजदूरों और कामगारों

के हक में आवाज उठाई थी और उस समय के अहंकारी और लुटेरे हाकिम ऊँट-पालक भागों की रोटी न खा कर उसका अहंकार तोड़ा और भाई लालो की नेक कमाई को सत्कार दिया था। इसलिए एक मई को 'भाई लालो दिवस' के तौर पर भी सिक्ख समुदाय में मनाया जाता है।

हर आत्मा जन्मजात राजा

भगवान ने धरती पर किसी को भी मजदूर बनाकर नहीं भेजा, सभी को राजा बनाकर भेजा है। हम सभी भगवान के राजा बेटे हैं। मानव जीवन पुरुष और प्रकृति का खेल है। आत्मा पुरुष, प्रकृति के बने शरीर को धारण कर रंगमंच पर अपनी भूमिका का निर्वहन करती है। इस अर्थ में हरेक आत्मा जन्मजात मालिक (राजा) है और शरीर तथा कर्मेन्द्रियाँ उसके कर्मचारी और नौकर हैं। जब व्यक्ति स्व स्वरूप में टिककर, अपने को इन्द्रियों का राजा अनुभव करते हुए कर्म करता है तो कर्म खेल लगता है, कर्म आनन्दकारी बन जाता है। इसके विपरीत, यदि वह देह के अभिमान में अर्थात् स्वयं को देह मानकर कर्म करता है तो उसे कर्म करते भारीपन आता है, आलस्य भी आता है और वह कामचोर भी कभी बन जाता है। 'मैं आत्मा राजा हूँ और कर्मेन्द्रियाँ मेरी कर्मचारी हैं' यदि वह इस स्मृति को बनाए रखे, साक्षी होकर कर्मेन्द्रियों से कार्य करवाए तो वह कर्मचारी जैसा कार्य करते भी राजा जैसी ऊँची स्थिति का आनन्द ले सकता है।

श्रम का सम्मान

फ्राँस के सम्राट नेपोलियन बोनापार्ट एक दिन अपनी पत्नी के साथ पेरिस की सड़कों पर पैदल चलने का आनंद ले रहे थे। मार्ग में मिलने वाले नागरिक, सम्राट के सम्मुख सिर झुका कर उनका अभिवादन कर रहे थे। महारानी को आम प्रजा के बीच इस तरह पैदल चलना बहुत अटपटा लग रहा था। दोनों चलते-चलते जब एक तंग गली में पहुँचे तो सामने से एक निर्धन लकड़हारा सिर पर लकड़ियाँ रखे निकला। सम्राट स्वयं एक ओर हो गए और उन्होंने महारानी को भी किनारे हटने का इशारा किया। महारानी को यह बहुत अपमानजनक लगा। वे झुँझलाकर बोलीं, 'यह लकड़हारा बहुत असभ्य प्रतीत होता है। उसने हमें अभिवादन तक नहीं किया। क्या यह सम्राट का अपमान नहीं? पर आप हैं कि एक किनारे हो गए।' महारानी की बात सुन नेपोलियन गंभीर होकर बोले, 'महारानी, **श्रम का अभिवादन करना किसी भी सम्राट को अभिवादन करने से अधिक महत्वपूर्ण है। श्रम से ही मनुष्य की पहचान होती है। श्रम से ही राष्ट्र का निर्माण होता है। इसलिए हमें श्रम का सम्मान करने में कभी हिचकिचाना नहीं चाहिए।'**

कार्य छोटा नहीं, विचार छोटे

कार्यों का विभाजन नहीं हो सकता कि अमुक कार्य छोटा है और अमुक बड़ा, छोटे या बड़े तो मानव के विचार होते हैं। कोई व्यक्ति ऊँचे सिंहासन पर बैठकर भी यदि हद के, स्वार्थ के, देहभान के विचार रखता है तो वह नाम भर के लिए ही ऊँचा है, असल में नहीं और कोई रास्ते की सफाई करते भी ऊँचे विचारों में रमण करता है तो वास्तव में ऊँचा वही है।

हर शरीरधारी को अपने शरीर की धुलाई-सफाई तो प्रतिदिन करनी ही होती है। यदि धुलाई-सफाई का काम छोटा समझा जाए, तो हर प्राणी इस छोटे काम को रोज करता है और जब तक जीयेगा, करता रहेगा, फिर बड़प्पन का अहंकार क्यों? बड़ा तो वह तब बने जब प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के समान देह से न्यारा हो, फरिश्ता रूप धारण करे और मैला करने वाले मैं, मेरे से मुक्त हो जाए। जिस कार्य से समाज के लोगों को सुख, सुविधा, स्वच्छता, आराम मिलता हो वह कार्य कभी छोटा नहीं हो सकता।

मजदूर अपने खून-पसीने की खाता है, थोड़े में खुश रहता है, अपनी मेहनत और लगन पर विश्वास रखता है तथा किसी के सामने हाथ फैलाना पसन्द नहीं करता है। इसलिए वह समाज की उन्नति के लिए अति-अति महत्त्वपूर्ण है, सलाम का हकदार है।

धन प्राप्ति का आधार श्रम

चाणक्य ने कहा है – ''जैसे धर्म करने से पाप नहीं रहता, मौन धारण करने से कलह नहीं होता, सजग रहने से भय नहीं होता, उसी प्रकार निरंतर मेहनत करने से दरिद्रता नहीं ठहर पाती।'' नि:संदेह निर्धनता को परास्त करने का महामंत्र है निष्ठापूर्ण श्रम।

श्रम – अचूक औषधि

आधुनिक युग में जबकि विज्ञान ने मानव को बटन दबाने की देरी भर में सुख के सभी साधन उपलब्ध करा दिए हैं, श्रम का महत्त्व केवल धन के सुख के लिए नहीं बल्कि स्वास्थ्य का सुख पाने के लिए भी बढ़ गया है। देखने में आ रहा है कि कड़ी मेहनत करके श्रमिक, जमीन या साधारण चारपाई पर भी गहरी नींद सोता है जबकि श्रम से कतराने वाला व्यक्ति नरम गद्दों पर भी करवटें बदलता है। श्रमिक को मोटी रोटी और छाछ भी हजम हो जाती है जबकि श्रमहीन व्यक्ति को स्वादु और तथाकथित सन्तुलित भोजन भी बदहजमी पैदा कर देता है। श्रम करने से शरीर की कसरत हो जाती है और बीमारियाँ पास नहीं फटकती जबकि आरामतलब व्यक्ति मोटापा तथा अन्य कई प्रकार की बीमारियों से अनायास ही ग्रसित हो जाता है अत: हम धनिक हैं तो भी थोड़ा-बहुत श्रम अवश्य करें, अपने बगीचे में पेड़-पौधों की सेवा, प्रात:कालीन सैर, अपने शरीर के छोटे-छोटे कार्य स्वयं निपटाने की आदत डालें तो आत्मनिर्भर बनेंगे, प्रसन्न रहेंगे और स्वस्थ भी रहेंगे। इस सम्बन्ध में एक कहानी याद आती है–

एक धनवान सेठ को रात भर नींद नहीं आती थी। एक दिन नगर में पधारे हुए एक साधु को उसने अपनी परेशानी बताई। साधु ने कहा, ''वत्स, तुम्हारे रोग का कारण तुम्हारा अपंग होना है।'' सेठ हैरानी से बोला, ''महाराज, मैं अपंग हूँ? साधु विनम्रता से बोले, ''अरे भाई, वास्तविक अपंग तो वही होता है जो हाथ-पैर सही सलामत होने पर भी उनका इस्तेमाल नहीं करता। बताओ, दिनभर में तुम अपने शरीर से कितना काम लेते हो?'' सेठ चुप हो गया क्योंकि वह तो छोटे-छोटे काम के लिए भी नौकरों पर निर्भर रहता था। साधु बोले, ''अगर अनिद्रा से बचना है, तो इतनी मेहनत करो कि थक कर चूर हो जाओ, अनिद्रा अपने आप दूर हो जायेगी।'' सेठ ने ऐसा ही किया और गहरी व चिंतामुक्त निद्रा का आनंद लिया।

व्यसनों द्वारा शोषित होने से बचें

वर्तमान समय व्यसन पदार्थों के बढ़ते प्रचलन के कारण श्रमिक भी इनकी चपेट में आ रहे हैं। वे जितना कमाते हैं उसका काफी हिस्सा इन पर गवाँ देते हैं। उनके शरीर पर इनका बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है, कार्यशक्ति का ह्रास होता है, थके-थके रहते हैं, घर में कलह और अभाव पैदा होते हैं और आयु कम होने से अकालमृत्यु का भी शिकार हो जाते हैं। अत: हमारे श्रमिक भाइयों को इस श्रम दिवस पर यह आत्मचिन्तन जरूर करना चाहिए कि वे उद्योगपतियों और मालिकों की शोषणकारी नीतियों से तो मुक्त हो गए, सरकार ने उसके कार्य के घंटे और आय भी निश्चित कर दी है परन्तु यदि वे स्वयं के व्यसनों की आदतों से शोषित हैं तो इनसे मुक्ति कौन दिलाएगा?

प्रण लें

अत: श्रम दिवस पर सभी श्रमिक स्वयं द्वारा स्वयं के शोषण से बचने का प्रण लें। धन, तन और परिवार का नाश करने वाली स्वयं की गलत आदतों से छूटने की प्रतिज्ञा अवश्य करें। सरकार तथा गैर-सरकारी संस्थाएँ और वे संस्थान जहाँ वे सेवारत हैं, समय-समय पर नि:शुल्क व्यसन-मुक्त शिविर आयोजित कर इन्हें जागृति दें। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय इस क्षेत्र में विशेष प्रयत्नशील है और लाखों को व्यसनमुक्त बनाने में सफल हुआ है। स्थानीय ब्रह्मा कुमारीज़ केन्द्र और मुख्यालय – दोनों ही इस सेवा में तत्पर हैं। श्रमिकों और श्रम को सलाम करते हुए पुन: अपने कर्मठ श्रमिक भाई-बहनों से एक ही अपील है, तोड़ो, व्यसनों की कारा तोड़ो।

❖

जगदीश भाई जी कहते थे,

मधुबन महायज्ञ मनइच्छित फल देने वाला है

ब्रह्माकुमारी प्रभा, पीतमपुरा (दिल्ली)

ब्रह्माकुमारी प्रभा बहन ने भ्राता जगदीश चन्द्र जी के साथ 18 सालों तक शक्तिनगर सेवाकेन्द्र में रहकर ईश्वरीय सेवाएँ कीं और बहुत कुछ सीखने का सुअवसर प्राप्त किया। प्रस्तुत कर रही हैं आप भ्राता जी के महान प्रेरणादायी जीवन के

भाई साहब कहते थे, बुद्धि नये घर (सतयुग) की तरफ जानी चाहिये। जब नया घर बनता है तो किन-किन बातों का ध्यान रखा जाता है? तन, मन, धन लगायेंगे। दिन में कई चक्कर लगाने जायेंगे। श्रमिकों से बातें करेंगे। हमारी श्रमिक (प्रकृति) है। आप भी योजना बनाओ; राय, सलाह करो। गली-गली में जो पाठशाला खोल सकते हैं उन्हें अलग से बिठाकर महत्व समझाओ कि हॉस्पिटल खोलने वालों को तन्दुरुस्ती अच्छी मिलती है। बाबा आपको हैल्थ, वेल्थ, हैप्पीनेस....सब देंगे। सेवाओं के लिए प्रदर्शनी करो, मन्दिर के पुजारी को समझाओ, मौत पर भी जाकर भाषण करो। सेवा से उमंग-उत्साह, खुशी बढ़ती है। दुआओं का खाता जमा होता है। माता-पिता की पालना का कर्ज उतरता है। लौकिक में अगर बेटा दुकान, मकान, पैसा गवां दे तो बाप दोबारा नहीं देता और हमारे बाबा इतने दयालु, कृपालु हैं, क्षमा के सागर हैं, रहमदिल हैं, हमें फिर से दे देते हैं। हमने कितनी बार गंवाया है! भाई साहब कहते थे, चन्द्रमा की रोशनी कम होते-होते एक लकीर बच जाती है। ऐसे ही आपमें ऐसी कौन-सी लकीर (गुण) बची है जो आपको पुन: सम्पूर्ण चन्द्रमा बनाती है। दादी जी से यह प्रश्न पूछा, दादी जी बोली, मैंने बचपन से कभी झूठ नहीं बोला, बचपन से सत्यता पसन्द है। जब मुझसे पूछा तो बताया, मुझे बचपन से शान्ति में रहकर पढ़ाई पढ़ने का शौक था जो अभी तक कायम है और बाबा ने इसको बढ़ा दिया है।

टाइम बॉक्स बनाओ

भाई साहब कहते थे, जिन भाई-बहनों ने भोग लगवाया है, सतगुरुवार से पिछली रात्रि को बाबा को उनके बारे में बताओ और अमृतवेले भी बाबा को बोलो कि बाबा, 'आप सबके रक्षक हो, इन भाई-बहनों की आशा पूरी करना, इनके दुख दूर करना, ये सब आपके बच्चे हैं। आप सूक्ष्मवतन में सम्पूर्ण ब्रह्मा बाबा के तन में प्रवेश होकर भोग स्वीकार करें, फिर हम बच्चे स्वीकार करेंगे। यह दुख भंजन भोग सबके दुख दूर करेगा। सब अपनी प्लेट से भोग यहीं खाके जायें और जो ये प्रभु प्रसाद खाये, बाबा का पक्का, सगा बच्चा सदा बना रहे।' यही शुभ आश रख के भोग बनायें। जैसे मनी बॉक्स घर में रखते हैं, पैसे उसमें डालते हैं, ऐसे आप टाइम बॉक्स बनाओ। समय की बचत करो, व्यर्थ नहीं करो। गया वक्त कभी हाथ नहीं आता, समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता, समय का सदुपयोग करो, तुम समय को नष्ट करोगे, समय बलवान है, वह तुम्हें नष्ट कर देगा।

परख शक्ति बढ़ाओ

एक बार भाई साहब ने सुबह 7 बजे क्लास के समय 2 विद्यार्थियों को उन भाई-बहनों के घर भेजा जो क्लास में नहीं आ रहे थे, कहा, जाकर देखो, वो क्यों सो रहे हैं, उन्हें लेकर आओ। सूर्य सुबह निकलता है, चाँद शाम को। सुबह क्लास करोगे तो सूर्यवंशी बनोगे, शाम को क्लास करोगे तो चन्द्रवंशी बनोगे। चाँद शीतलता देगा मगर ताकत नहीं। सुबह की क्लास में मक्खन और शाम की क्लास में छाछ। मक्खन शक्ति देता है और छाछ शीतलता। जज बनो, वकील नहीं। निर्णय शक्ति, परखने की शक्ति

बढ़ाओ। क्यों, क्या, कैसे – ये बहसबाजी नहीं करो। मीठे बनो पर इतने भी नहीं कि कोई आपको चट करके चला जाए अर्थात् आपके मन-बुद्धि को बाबा से हटा दे।

समय, श्वास, शक्तियाँ अच्छे कार्य में लगाओ

एक टीचर बहन ने कहा कि मुझे पता ही नहीं था कि ऐसा बोलने से ऐसा होगा। तो बोले, पता करो वरना ऐसा ना हो कि पत्ता ही कट जाये। बाबा तो सतयुग की बादशाही दे रहे हैं, आप खुद क्यों त्रेतायुग वाली आत्मा के कार्य कर रहे हो? 'टाईम्स ऑफ इन्डिया (अखबार)', जो सुबह टेबल पर रखा होता था, बाद में भाई साहब के पास चला जाता था। एक दिन टेबल पर ही रखा था। मैंने पढ़ लिया, मुझे डांट पड़ी कि आपको राम की मुरली याद हो गई है, जो रावण की मुरली पढ़ रही हो! यह दुखधाम है। अखबार दुखों से भरा हुआ है, कोई खुशी की खबर नहीं। आप सुबह 4 बजे से योग लगा रही हो, खुशी में रहने का पुरुषार्थ कर रही हो, फिर दुख के समाचार क्यों पढ़ रही हो? तीन सीढ़ियाँ चढ़ो, 5 नीचे उतर जाओ तो मंजिल पर कब तक पहुँचोगे। मातायें हाथ से स्वेटर बुनती हैं, 8 सलाई बुनें और 7 उधेड दें, तो स्वेटर कब तक बुना जाएगा? ये दो उदाहरण सबको देते थे और समझाते थे कि समय, श्वास, शक्तियाँ सब अच्छे कार्य में लगाओ।

विचार सागर मन्थन की आदत डालो

भाई साहब कहते थे, सात दिन के कोर्स की पुस्तक में रावण का चित्र ध्यान से देखो। पाँच शीश (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार) जो दिखाये गये हैं, चेक करो कि इनमें से कौन-सा विकार मेरे चेहरे से दिखाई दे रहा है और उसे खत्म करो। एक बार एक भाई ने कहा, आप इन (ब्रह्मा बाबा) को भगवान कहते हो, इनकी फोटो लगाई हुई है। भाई साहब ने उसे समझाया। नहीं माना तो बाद में उसे कहा, आपकी फोटो लगा दें? उस भाई ने हाथ जोड़कर कहा, नहीं, मैं इस लायक नहीं हूँ। भाई साहब बोले, तो जो लायक हैं उन्हें ही बैठने दीजिए। कभी पार्क में सैर करने के बाद बैठते थे तो टीचर्स बहनों से प्रश्न पूछते थे कि कोयल की, कुत्ते की, तितली की, कछुए की, हाथी की, मछली की क्या विशेषतायें होती हैं, विचार सागर मंथन करने की प्रेरणा देते थे। सुन्दर शरीर में गन्दा मन, सोने की थाली में लोहे की कील के समान है। कभी कहते, यज्ञ का पूरा नाम (राजस्व अश्वमेध अविनाशी रुद्र गीता ज्ञान यज्ञ) लिखो। कभी कहते, गीता का पूरा नाम लिखो (श्रीमद्‌भगवद् गीता)। बाबा ने वतन से कौन-कौन से नाम भेजे (प्रकाशमणि, गुलजार, रतनमोहनी, चन्द्रमणि, मनोहरइन्द्रा...), लिखो। मुरली में कभी गांधी, नेहरू, मोहम्मद गौरी, महमूद गजनवी का नाम आता तो कहते, भगवान के मुख से इनका नाम निकला है, तो ये तर जायेंगे।

सेवा करके फिर घर जाओ

भाई साहब कहते थे, मुरली क्लास के बाद एक घण्टा रास्ते में पर्चे बांटके, सेवा करके फिर घर जाओ। चाहे स्कूल में हो, कॉलेज में हो, ऑफिस में हो, हर एक के बैग में बाबा के सन्देश के पर्चे मिलने चाहिएँ। मातायें भी पार्क वालों की, दूध वाले, सब्जी वाले, बस स्टैण्ड पर जो खड़े हैं उनकी, जिम वालों की, मैट्रो वालों की, कभी किसी एरिया में, कभी किसी एरिया में सेवा करके घर जायें। शिवरात्रि के दिनों में मन्दिर के बाहर जो सेवा कर सकते हैं, प्रदर्शनी की या पर्चे बांटने की वो करें। अभी भी दिल्ली से आबू की ट्रेन में मातायें और भाई पुरानी ज्ञानामृत कोई 100 ले जाता है, कोई 50, बांटते हैं। ये संस्कार भाई साहब ने हमारे में डाले हैं।

सेठ दक्षिणा बहुत बड़ी देगा

मैंने उन्हें सादे रूप में ही देखा। सर्दी में पुराने कुर्ते-पायजामे प्रयोग करते थे क्योंकि शाल आदि से ढक जाते थे। इसी प्रकार बाजू वाली अन्दर की बनियानें (जो सूई-धागे से सिली होती थी) सर्दी में 5 मास प्रयोग करते थे, ज्यादा खर्च नहीं करने देते थे। कहते थे, कम खर्च करो तभी बाबा के सेवाकेन्द्र खोल सकोगे। मधुबन का महत्त्व हमेशा समझाते थे कि हर मास मधुबन के लिये भेजो, महायज्ञ है, महाप्रसाद मिलेगा, मन इच्छित फल देगा। बहुत बड़े सेठ ने यज्ञ रचा है, आप ब्राह्मणों को दक्षिणा बहुत बड़ी देगा – धन की ऐसी समझ कि कैसे, कहाँ खर्च करो, आज भी हमें आगे बढ़ा रही है। ❖

वे अशान्त मन को शान्त करने आई थी

ब्रह्माकुमार आर.के.लाल, गोविन्दपुर (इलाहाबाद)

घटना उस समय की है जब मैं जनपद कुशीनगर (उत्तर प्रदेश) के विकास खण्ड दुदही में खण्ड विकास अधिकारी के रूप में अपनी सेवाएँ दे रहा था। सायं 5 बजे का अवकाश का समय था। जैसे ही क्षेत्र भ्रमण द्वारा सरकारी कार्यों का सम्पादन करके कार्यालय परिसर में प्रवेश किया, सभाकक्ष के सामने खड़ी श्वेत वस्त्रधारिणी ब्रह्माकुमारियों को देखा। मन में चिन्तन शुरू हो गया कि ये ब्रह्माकुमारियाँ तो स्व-शान्ति से विश्व में शान्ति का संदेश फैला रही हैं, आज कौन-सी समस्या ने इन्हें अशांत कर दिया जो मेरे कार्यालय प्रांगण में समाधान हेतु उपस्थित हुई हैं। जैसे ही मैं उनके समीप पहुँचा, मेरा भ्रम दूर हो गया। ब्रह्माकुमारियाँ अशान्त नहीं थी बल्कि वे मेरे अशान्त मन को शान्त करने आयी थी।

सवाल था, आप कौन हैं?

मैंने ब्रह्माकुमारी बहनों को सम्मान व स्नेह के साथ अपने आवासीय परिसर में बैठाया। बातचीत का सिलसिला शुरू हुआ। एक बहन ने सवाल-जवाब शुरू किये और मुझे एहसास होने लगा जैसे कि विधानसभा का प्रश्नोत्तर काल शुरू हो गया, मैं सतर्क हो गया। बहन ने एक सहज-सा सवाल पूछा, आप कौन हैं? मैंने उत्तर दिया, मैं इस शरीर से पृथक एक चैतन्य आत्मा हूँ। प्रश्नकर्त्ता बहन की मंद-मंद मुसकराहट से मैं भाँप गया कि मेरा उत्तर सटीक है। आत्मा-परमात्मा के परिचय व गुणों से सम्बन्धित विषयों पर देर तक चर्चा हुई। प्रश्नकर्त्ता तथा उत्तरदाता, दोनों ही परस्पर एक-दूसरे से संतुष्ट होते जा रहे थे। ब्रह्माकुमारी बहनों के आग्रह पर मैंने सेवाकेन्द्र दुदही में आने का निमन्त्रण स्वीकार कर लिया।

ईश्वरीय परिवार में नया जन्म

शीघ्र ही वह समय भी आ गया। रविवार अवकाश के दिन प्रात: 6 बजे अपनी कार चलाकर, कड़ाके की सर्दी व घने कुहरे को बेंधते हुए मैं सेवाकेन्द्र पर उपस्थित हो गया। परमात्मा शिव द्वारा प्रदत्त ईश्वरीय ज्ञान से मुझे परिचित कराया गया और उसी दिन प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय परिवार में मेरा नया जन्म हो गया। उसी दिन से रूहानी यात्रा भी शुरू हो गयी।

इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय में 10 अप्रैल, 2017 को शिव बाबा से मिलने की तिथि निश्चित थी। माउन्ट आबू जाने की तैयारियाँ शुरू थी, पवित्रता की समीक्षा हो रही थी। मैं निश्चय कर चुका था कि बाबा मिलन में मैं अवश्य जाऊँगा परन्तु मेरे सामने दो बड़ी चुनौतियाँ थी। प्रथमत: विकास कार्यों के क्रियान्वयन व संचालन की शासकीय जिम्मेदारी व दूसरी ओर बाबा मिलन में जाने के लिए अपनी आत्मिक स्थिति को मजबूत करने की तैयारी। निमित्त बहन को मेरी मजबूत आत्मिक स्थिति पर संदेह स्वाभाविक था। मैंने सभी बहनों से आग्रहपूर्वक कहा कि यदि शुकदेव जी जैसा वक्ता (शिक्षक) हो और राजा परीक्षित जैसा श्रोता हो तो श्रीमद्भागवत् की 1000 दिन की कथा को 7 दिन में सुनाकर श्रोता की मृत्यु सुधारी जा सकती है। मैं तो परमपिता परमात्मा का ज्ञान सुनता हूँ, मैं राजा परीक्षित जैसा श्रोता बनने के लिए तैयार हूँ, आप बहनें शुकदेव जैसा वक्ता बनने के लिए तैयार हो जाइये।

एक कदम मेरा, हजार कदम बाबा के

मेरा पुरुषार्थ रंग लाया, मेरी आत्मा की पवित्रता निरन्तर बढ़ती गयी, बाबा में एकाग्रता व दृढ़ता भी बढ़ती गयी। पवित्रता मेरे चाल व चलन से स्पष्ट होती जा रही थी। मैंने एक कदम बढ़ाया, बाबा ने हजार कदम बढ़कर मेरे

हाथ पकड़ लिये। बाबा का वरदानी हाथ मेरे सिर पर था। सफलतामूर्त भव का वरदान बाबा से मुझे प्राप्त हो गया था। निमित्त बहन की प्रेरणाओं और पुरुषार्थ को तीव्रगति देने में उनके सहयोग की स्मृति जीवनपर्यन्त बनी रहेगी। मेरी सेवाएँ 28 फरवरी, 2017 को समाप्त हो गई। सेवानिवृत्ति के बाद मैं अपने मूल निवास इलाहाबाद आ गया। बाबा तो सदा साथ थे परन्तु बाबा द्वारा प्रदत्त मुरली सुनने की सुविधा मेरे साथ नहीं थी। एक दिन घन्टों प्रयास के बाद गीता पाठशाला को ढूँढ़ लिया और मैं वहाँ प्रतिदिन मुरली क्लास करने जाने लगा।

अद्भुत परिवेश में आनन्दानुभूति

इसके बाद बाबा से मिलने का वह दिन भी आ गया। कुशीनगर की बहनों के साथ आध्यात्मिक यात्रा करता हुआ मैं आबू रोड पहुँच गया। विश्व विद्यालय का अद्भुत वातावरण और आश्चर्यजनक परिवेश देखकर मुझे शान्ति और आनन्द की अनुभूति होने लगी। संख्या 30 हजार की परन्तु नियंत्रित करने के लिए कोई पुलिस फोर्स नहीं, लोग स्वत: ही नियंत्रित हो रहे थे और नियंत्रण में अपना सहयोग कर रहे थे।

भवन ऐसे दिख रहे थे जैसे साक्षात् विश्वकर्मा जी ने अपने हाथों से बनाये हों। परमपिता परमात्मा के सर्व गुणों का प्रकम्पन प्रकाश की किरणों द्वारा मुझमें समाहित हो रहा था। सहज रूप से मेरे मन में आया कि यह परिसर परमात्मा शिव की छोटी राजधानी है, जहाँ रहकर वे अपने सर्व कल्याण कार्यों का सम्पादन करते भी हैं तथा अपने बच्चों से कराते भी हैं। लगभग 70 एकड़ में फैले शान्तिवन परिसर को धरती का स्वर्ग कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी।

पर्वत को राई करे...

दादियों की परमात्म स्नेहयुक्त वाणी और बाबा के लाडले बच्चों के प्रति मातृभाव देखते ही बन रहा था। विश्व विद्यालय में प्रकृति भी अपने मूल स्वरूप में दिखी। जमीन की उर्वरता से बनी पेड़-पौधों की सुन्दरता संकेत दे रही थी कि हम सतयुग की ओर कदम बढ़ा रहे हैं। विश्व विद्यालय परिसर छोड़ने का समय भी आ गया। मैं शिवगंगा एक्सप्रेस से, बाबा की याद लिए संगम नगरी प्रयाग के लिए चल दिया। कब प्रयाग आ गया, पता ही नहीं चला। पत्नी शकुन्तला से कहा, आपके निरोग होने के लिए बाबा को प्रार्थना पत्र लिखकर आया हूँ। पत्नी ने मुसकराते हुए कहा, डॉक्टर मलहोत्रा की दवा खानी मैंने बन्द कर दी है, अब मुझे घबराहट नहीं होती है, सुबह-शाम सहज राजयोग का अभ्यास करती हूँ, अब मैं निरोगी बन गयी हूँ। अचानक बाबा की शक्तियों की महिमा की पंक्ति याद आने लगी, राई से पर्वत करे, पर्वत राई माँह। मन खुशी में गा उठा,'' तेरे साथ का अनुभव बड़ा निराला है।"

❖

युवा तू कर

ब्रह्माकुमार नेमपाल,
चन्दौसी (उ.प्र.)

खुद को और खुदा को जान,
युवा, तू कर जग कल्याण।
महापरिवर्तन की है वेला,
कहना अब तू उसका मान।।
युवा तू कर.........
समय की ना कर तू बर्बादी,
संगमयुग की महिमा जान।
स्वयं जाग और जगा दे सबको,
बन जा तू अब देव समान।।
युवा तू कर.........
कौड़ी से बन जा तू हीरा,
कल्प-समय हो रहा है पूरा।
गवाँ नहीं ये वक्त सुनहरा,
ईश्वर का तू कहना मान।।
युवा तू कर.........
चाहता था तू, कुछ नया करूँ,
एक नया इतिहास रचूँ।
ये वही समय है जाग जा,
बुराइयों को तू लाँघ जा,
सद्गुण कर आदान-प्रदान।।
युवा तू कर.........
भटक रहा तू क्यों दर-दर,
परमपिता आये हैं इधर।
बना रहे तेरा भाग्य प्रखर,
बनता है तू क्यों अनजान।।
युवा तू कर.........

सदा प्रसन्न रहने के लिये प्रशंसा की इच्छा का त्याग करना जरूरी है

अब मैं डिप्रेशन से मुक्त हूँ

व्यंग्यकार डॉ. (इंजी.) आलोक सक्सेना, नई दिल्ली

बात नवम्बर, 2014 की है, दूरदर्शन, नई दिल्ली का टैक्नीकल डायरेक्टर और राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त प्रयोगधर्मी व्यंग्यकार मैं, अचानक ही पेट में इंटेस्टाइनल मैटाप्लासिया विद एच पायलौरी बैक्टीरिया और रात को पेट में लंबे समय तक रोजाना हल्का-हल्का दर्द होते रहने के कारण जबरदस्त भय का शिकार हो गया कि ''अब नहीं बचूँगा, सारी दुनिया बेकार है। व्यंग्यकार होने की जितनी ख्याति पर पहुँचना था, पहुँच लिया और अब कुछ नया हो ही नहीं सकता। विचारशून्य हो चुका हूँ मैं। मैं अब और जीना नहीं चाहता।''

चिकित्सक ने की काउंसलिंग

लंबे समय तक डिप्रेशन में पड़े रहने के कारण मेरी पत्नी सीमा सक्सेना ने डॉ.राममनोहर लोहिया अस्पताल, नई दिल्ली के मनोरोग विभाग में दिखाने और नियमित इलाज करवाने की योजना बनाई। चिकित्सक ने काउंसलिंग की और समझाया, ''जो हो गया सो हो चुका, आपने जो कुछ भी किया वह ठीक किया, आपने किसी के साथ कोई बुरा नहीं किया। यह जिंदगी ना मिलेगी दोबारा इसलिए सकारात्मक होकर जीने का पुन: प्रयास करें और फिर से विजेता बनें।''

घेरे रहती थी नकारात्मक विचारों की शृंखलाएँ

उस विषम समय में सर्वप्रथम मेरी जमकर काउंसलिंग मेरी पत्नी और मेरे पुत्र व पुत्री ने भी की। बीमारी के दौरान जब मैं अपने बेड से उठता नहीं था, यहाँ तक कि नहाने का भी मन नहीं करता था और कमरे में अंधेरा करके सोया पड़ा रहता था तो कमरे में रोशनी करके मुझे जबरदस्ती उठाया जाता था और जबरदस्ती नहलाया जाता था। मेरा पुत्र जबरदस्ती उठाकर, नहाने हेतु बाथरूम भेजता व जबरदस्ती कार्यालय भेज देता। कभी-कभी तो मैं घर से तो कार्यालय के लिए निकल जाता था परन्तु कार्यालय नहीं जाता था। पूरे दिन बस इधर-उधर घूम-फिर कर शाम को घर वापस आ जाता था।

मेरे एक सहकर्मी ने मुझे राय दी कि सर, आप सर्वोपरि ग्रंथ श्रीमद्भगवद्गीता का पाठ करें और 'हरे कृष्ण, हरे कृष्ण, हरे कृष्ण, कृष्णा-कृष्णा हरे-हरे...' मंत्र का दिन में 108 बार जाप करें। मैंने उस साथी की बात मान ली और पूरा गीता पाठ व माला-जाप किया, फिर भी कोई विशेष लाभ नहीं मिला।

खोई मंजिल मिल गई

डिप्रेशन के दौरान मेरी पड़ोसी ब्रह्माकुमारी पूजा बहन ने मुझे ब्रह्माकुमारीज के राजयोग मेडिटेशन के बारे में घर आकर समझाया परंतु मैंने उनकी एक न सुनी। समय यूँ ही बेकार बीतता रहा और डिप्रेशन भी बढ़ता रहा। अप्रैल, 2016 के प्रथम सप्ताह में एक दिन मेरे कार्यालय में एक सहकर्मी बहन संगीता साहनी ने डिप्रेशन से पूर्णत: ठीक होने की आपबीती सुनाकर मुझे राजयोग मेडिटेशन के बारे में विस्तार से बताया और लौकिक जगत की सगी बहन से ज्यादा प्रेम और प्रेरणा प्रदान की। उनके नि:स्वार्थ सहयोग व नित्य प्रति के अनुरोध से एक दिन मेरे कदम बेहतर सकारात्मक जीवन जीने की कला सीखने की चाह में सीरीफोर्ट (दिल्ली) स्थित प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की ओर स्वयं ही बढ़ चले। मुझे ऐसा लगा जैसे कि कोई मुझे वहाँ बुला रहा है। मेरा उनसे कई जन्मों का पुराना नाता है। बस, वहाँ जाकर मुझे लगा मानो मुझे मेरी खोई हुई मंजिल मिल गई। जीवन जीने, पुरुषार्थ करने और अहोभाग्य बनाने का लक्ष्य मिल गया। अपनी सहकर्मी बहन

संगीता साहनी को मैं अपनी बड़ी बहन मानता हूँ और हर वर्ष राखी भी बंधवाता हूँ।

छूमंतर हुआ डिप्रेशन, मिली है हैप्पीनेस

मैं पहली बार जब प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय पहुँचा तो वहाँ एक बोर्ड पर मुरली बजाते हुए बालरूप श्रीकृष्ण की आकर्षक तस्वीर के साथ लिखा हुआ था, 'अपने लक्ष्य को इतना महान बना दो कि व्यर्थ के लिए समय ही न बचे।' इसे पढ़कर मैं आत्मचिंतन में डूब गया। फिर मैंने सात दिन के निःशुल्क कोर्स हेतु तुरंत अपना रजिस्ट्रेशन करवा दिया। कोर्स के दौरान सिखाए गए मेडिटेशन के परिणामस्वरूप, परमपिता परमात्मा की अनुकंपा से मेरे अंदर उत्साह, सकारात्मक दृष्टि के साथ नया जीवन जीने की नई उमंग आई और इसके ठीक दो महीने बाद ही मैंने डिप्रेशन की तमाम एलोपैथिक दवाइयाँ बंद कर दीं। अब मैं डिप्रेशन से पूर्णतः मुक्त हूँ। राजयोग मेडिटेशन के द्वारा मेरा डिप्रेशन छूमंतर होकर सौ प्रतिशत हैल्थ, वेल्थ और हैप्पीनेस में बदल गया। हाल ही में मेरा नया छठा व्यंग्य-संग्रह 'पप्पू बन गया अफसर' किताबघर द्वारा प्रकाशित होकर आया है जो कि काफी चर्चित हुआ। डिप्रेशन उपरांत यह मेरी पहली बड़ी उपलब्धि है। इस पुस्तक को मिलाकर अब तक मेरी बारह मौलिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। अपने डिप्रेशन के दौरान मैंने कार चलाना छोड़ दिया था, अब वह भी खूब चलाता हूँ। अब मैं पूर्णतः स्वस्थ हूँ। निराकार भगवान के साथ होने का अनुभव होता है। यह अनुभव उसी को होता है जो स्वयं भगवान से जुड़कर राजयोग की कला सीखता व समझता है।

नयी ज्योति से आलोकित किया बाबा ने

इस विश्व रंगमंच का क्रिएटर, डायरेक्टर और मुख्य एक्टर तो वही सुप्रीम पावर परमपिता परमात्मा ही है। सबका मालिक एक ही है। ईश्वरीय विश्व विद्यालय से जुड़ने के बाद मुझे परमात्म ज्ञान मिला, परमात्मा बाप मिला, इससे सब कुछ ही बदल गया। वाह ड्रामा वाह! डिप्रेशन के दौर मैं जितना गिरा था, उससे कई गुना ऊपर उठाकर शिवबाबा ने अपनी गोदी में बैठा कर मुझे रूहानी पालना दी है। मुझे नई ज्योति से आलोकित किया है। मेरे सकारात्मक सोच और आभा-मंडल का विस्तार किया है। बाबा ने अपना परिचय देकर अनुभव के आधार पर विश्वास दिलाया है कि मैं वही हूँ जो कलियुग में धर्म की अति ग्लानि होने पर कल्प-कल्प आता हूँ और ज्ञान देकर नई सृष्टि की रचना करता हूँ। बाबा ने 'योगी बनो, पवित्र बनो' का पाठ पढ़ाया है। इस मनुष्य जन्म में ही दैवी संस्कार धारण कर विश्वकल्याण करने का सबक दिया है। देहअभिमान छोड़ आत्म-अभिमानी होने का ज्ञान करवाया है। जीवन में पाँच विकार (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार) का त्याग करना सिखाया है। गृहस्थ जीवन में रहते हुए भी कमलपुष्प समान जीवन जीने की अनोखी कला सिखाई है। 'मीठे बच्चे' कहकर अपना ढेर सारा प्यार और जीवनमुक्ति का सच्चा ज्ञान दिया है।

बदल गया जिंदगी का रंग-ढंग

राजयोग मेडिटेशन के आधार पर परमात्म मिलन के सुख के बाद तो मेरी जिंदगी का रंग-ढंग ही बदल गया है। स्वयं भगवान ने मुझे जीना सीखा दिया है। मेरे जीवन में सुख, शान्ति और समृद्धि का अनंत विकास होना आरंभ हो गया है। ईश्वरीय विश्व विद्यालय से जुड़कर, सच्चे परमात्म मिलन का अनुभव करके डिप्रेशन दूर भाग गया है।

तांत्रिकों व झाड़फूँक का सहारा न लें

मैं अपने अनुभव से कहना चाहता हूँ कि डिप्रेशन के रोगी को मनोचिकित्सक को दिखाकर, उसका बेहतर इलाज व काउंसलिंग अवश्य करवानी चाहिए। जिस प्रकार बी.पी., शुगर आदि हो जाने पर डॉक्टर का बहुत बड़ा सहयोग होता है, उसी प्रकार, डिप्रेशन में मनोचिकित्सक की काउंसलिंग और समस्त घनिष्ठ पारिवारिक सदस्यों, मित्र-संबंधियों व उच्चाधिकारियों के पूर्ण स्नेह भरे सहयोग, विश्वास और मेडिटेशन अर्थात् ध्यान की भी आवश्यकता होती है। ऐसी स्थिति में तांत्रिकों और ओझा-बाबाओं की झाड़फूँक का सहारा बिल्कुल भी नहीं लेना चाहिए। सम्मोहन, ताबीज, बलि और राख इत्यादि डिप्रेशन का इलाज नहीं हैं। ❖

जिंदगी को ढूंढ़ने मत जाओ, निर्माण करो

ब्र.कु. विनायक, सोलार प्लांट (शान्तिवन), आबू रोड

सुख-शान्ति, सुविधा, स्नेह, सम्मान आदि की खोज करना मानव का सहज स्वभाव है। वह जहाँ भी जाए, इन चीजों को प्राप्त कराने वाले साधनों की निरंतर खोज करता रहता है। अगर इनमें से एक भी बात का अभाव महसूस होता है तो जिंदगी अधूरी लगने लगती है। बेचैन होकर फिर से उसी को ढूंढ़ना शुरू कर देता है।

क्या नहीं खोजा जिंदगी के लिए?

बचपन से ही खोज शुरू हो जाती है। एक खिलौना फेंका, दूसरा मांगा। खाने-पीने के पीछे माँ-बाप को परेशान किया। कई प्रकार के कपड़े, जूते बदल डाले ताकि सुंदर दिखूँ। साइकिल से तंग होकर बाइक ली, उसको छोड़कर कार ली। छोटी-सी बात आई, अहम् को चोट लगी तो मित्रों को बदल डाला। गाँव की मेहनत को छोड़ा और शहर की विलासिता को अपनाया। जीवन-साथी को मनाने के लिए माँ-बाप से अलग होकर घर बदल लिया। नए घर में शान्ति नहीं मिली तो वापिस पुराने घर में लौट आया परन्तु माँ-बाप को वृद्धाश्रम का रास्ता दिखा दिया। सात्विक सुख फीका लगा तो अनैतिक आनंद के वश होने लगा। इतना ही नहीं, जीवन-साथी तक बदल डाला सुख की तलाश में। जैसे-जैसे उम्र बढ़ती गई, तलाश भी बढ़ती गई।

आध्यात्मिक क्षेत्र में भी असर

उपरोक्त सत्य सांसारिक प्राणियों के बारे में है परन्तु कभी-कभी आध्यात्मिक साधक को भी खोज करने की बीमारी लग जाती है। शिवपिता, जो ज्ञान-गुण-शक्तियों के सागर हैं, से सर्व प्राप्तियाँ करके संतुष्ट होने के बजाय वह व्यक्ति-वस्तु-वैभव के क्षणिक सुखों में संतुष्टता की तलाश करने लगता है। संतुष्टता के लिए अनेक सेवास्थान, सेवासाथी, सुविधाएँ आदि बदल लेता है लेकिन जिंदगी दिखाई नहीं देती है। जब औरों से मिलने वाले प्यार, स्नेह, सम्मान में कमी पड़ जाती है तो उनके अवगुण और कमजोरियाँ दिखाई देने लगते हैं। इससे निराशा, मन-मुटाव, नफरत, घृणा आदि अवगुणों के वश होकर साधना की रुचि ही खो बैठता है। ईश्वरीय ज्ञान की गहरी धारणा न होने के कारण एकव्रता नहीं बन पाता अर्थात् 'एक बल एक भरोसा' का व्रत, जोकि विघ्न मुक्त पुरुषार्थ की नींव है, का पालन करने में कमजोर बन जाता है।

आखिर मिल गई क्या जिंदगी?

ढूंढ़ते-ढूंढ़ते एक दिन शरीर में एक जगह दर्द होने लगा। अस्पताल गया तो डॉक्टर ने कहा कि खून की जांच और बायोप्सी करवा लो। रिपोर्ट को देखकर डॉक्टर ने कहा, सर, माफ कीजिए, मुझे यह कहते हुए खेद हो रहा है कि आपको कैंसर हुआ है और तीसरे स्तर तक बढ़ चुका है, इलाज़ की भी कोई आशा नहीं है। व्यक्ति ने हैरानी से पूछा, मुझे कैंसर? इतनी जल्दी? डॉक्टर ने कहा, बीमारी के लिए आयु की सीमा निश्चित नहीं है सर, कभी भी आ सकती है, वैसे आप की आयु भी तो साठ के आस-पास है इसलिए आप हिम्मत रखिये और अपने परिवार की परवरिश का प्रबंध कीजिए। जिंदगी की तलाश यहाँ समाप्त हो जाती है। अचानक कैसे समाप्त हुई? जिंदगी मिल गई क्या? नहीं! निकला तो था जिंदगी ढूंढ़ने पर पहुंच गया मौत के पास। व्यक्ति चकित हो जाता है कि साठ साल कैसे पूरे हुए? वैसे तो बाल सफेद नज़र आ रहे थे, चेहरे पर लकीरें भी दिखाई दे रही थीं, चश्मे का नंबर भी बढ़ गया था, घुटनों में दर्द शुरू हो गया था लेकिन इतने सब इशारे मिलते हुऐ भी समय की तरफ ध्यान ही नहीं गया! क्योंकि जिंदगी की तलाश में बेहद व्यस्त था।

दुखों का कारण पाप कर्म

इतनी तलाश के बाद भी क्यों नहीं मिली जिंदगी? इस

प्रश्न का उत्तर मिलता है भगवान शिव पिता द्वारा सिखाए गए कर्म सिद्धांत द्वारा। यह सिद्धांत कहता है कि जैसे कर्म हम करेंगे उस अनुसार फल पाएँगे। आत्मा जैसे-जैसे जन्म-मरण के चक्र में आती जाती है, वैसे-वैसे कर्मों के फल भी सामने आते जाते हैं। किसी के जीवन में अगर दुख ही दुख भरा हुआ है, हर कदम में अस्थिरता दिखाई दे रही है तो समझा जा सकता है कि उस आत्मा के पूर्व कर्म, पापों से लेपित थे इसलिए वर्तमान का जीवन, दुख से लेपित है, जो उन पाप कर्मों की सजा है। कर्म और प्रालब्ध के राज़ को न जानने के कारण व्यक्ति, किसी स्थान या व्यक्ति को अपने दुख का कारण समझकर, अन्य व्यक्ति या स्थान की तरफ भागता है अर्थात् अन्यत्र जिंदगी को ढूंढ़ता है।

पाप कर्म करना अर्थात् कर्जा उठाना

लेकिन, नियम यह है कि व्यक्ति, स्थान या सेवा को बदलने से समस्या का समाधान नहीं होगा। पाप कर्म करना अर्थात् कर्जा उठाना। बैंक से कर्जा उठाकर कितने भी स्थान बदलो, कर्ज चुक्ता नहीं होगा। हम जहाँ भी जाएँ, वह हमारे सर पर ही रहेगा। बैंक के नियम अनुसार ही उसको चुक्ता करना पड़ेगा। वैसे ही असहनीय बातें, कठिन परिस्थितियाँ, दुख, अपमान आदि, एक प्रकार से कर्मों के कर्जे हैं, जो हमारे साथ सदा रहते हैं, जिनको विधिपूर्वक ही चुकाना होगा।

ढूंढ़ने से नहीं मिलेगा बल्कि जीवन का निर्माण करना होगा

जरा सोचिए! दुनिया के मशहूर शहर जैसे मुम्बई, दिल्ली, पेरिस, हांगकाँग, न्यूयार्क आदि क्या किसी को ढूँढ़ने से मिले हैं? ताजमहल, आइफल टॉवर, पिरामिड जैसी विश्वप्रसिद्ध इमारतें, क्या पहले से तैयार थीं? बिलकुल नहीं! इनका निर्माण किया गया। वैसे ही संतुष्टता व सार्थकता, जो जिंदगी का सार हैं, ढूंढ़ने से नहीं मिलेंगी, उनका निर्माण करना होगा। स्थूल भवन का निर्माण पत्थर, ईंट, रेत आदि से होता है और जीवन का निर्माण ईश्वरीय ज्ञान, गुण और शक्तियों द्वारा होता है। इन तीनों को धारण करते रहना अर्थात् निर्माण कार्य में तत्पर रहना। आध्यात्मिक जीवन का निर्माण मुख्य सात बातों पर आधारित है।

प्रतिज्ञा: भवन निर्माण के प्रारम्भ में भूमि-शुद्धिकरण करते हैं। जीवन का निर्माण भी एक महत्वपूर्ण प्रतिज्ञा से शुरू होता है कि मैं मनसा-वाचा-कर्मणा किसी को भी दुख नहीं दूंगा। दुख देना अर्थात् वायुमण्ड़ल को कब्रिस्तान बना देना। कब्रिस्तान में निर्माण का कार्य नहीं किया जाता है।

बेहद का वैराग्य: बेहद का वैराग्य अर्थात् मरजीवा जन्म। दुनियावी आसक्तियों से बिलकुल परे रहना, सर्व संबंधों का सुख एक शिवपिता से प्राप्त करना और वे जहाँ रखें, जैसे रखें, जो खिलाएँ, जैसे चलाएँ उसमें संपूर्ण राजी रहना।

दो महावाक्यों की गहरी धारणा: पहला महावाक्य है, इस सृष्टि-नाटक में हर एक अभिनेता को अपनी-अपनी भूमिका मिली हुई है। एक की भूमिका न मिले दूसरे से। दूसरा महावाक्य है, मेरे दुख, कलह, क्लेश, समस्या आदि का कारण मेरे पूर्व कर्म हैं, इसमें अन्य किसी का लेशमात्र भी दोष नहीं है।

न्यारा और निर्लिप्त: प्रतिकूल परिस्थिति को देखते हुए, असहनीय बातें सुनते हुए, मन चलायमान करने वाले संबंध-संपर्क में आते हुए भी अवस्था न्यारी या निर्लिप्त हो। शिवपिता की श्रीमत से हटकर कोई भी प्रतिक्रिया हमारी कर्मेंद्रियों से न निकले। समय और परिस्थिति अनुसार जिस गुण व शक्ति की अवश्यकता है उसे प्रयोग में लाने का सामर्थ्य हम में हो।

ईश्वरीय नियमों की दृढ़ता से पालना: नियम पालन करना अर्थात् सशक्त दुर्ग निर्माण करना जहाँ दुर्गुणों के आक्रमण से आत्मा सुरक्षित रह सके। यह एक मधुर बंधन है। जो व्यक्ति अंगरक्षकों से घिरा हुआ होता है वह महामहिम कहलाता है, समाज उसको गौरवपूर्ण दृष्टि से

देखता है। वैसे ही, जो साधक ईश्वरीय नियमों के पहरे में होता है, उसका जीवन पवित्र और निष्कलंक माना जाता है और वह सदा सर्व से सम्मान पाता है।

भाईचारे की स्मृति: हम सब आत्माएँ हैं और एक परमपिता परमात्मा शिव के बच्चे आपस में भाई-भाई हैं। यह सत्यता व्यवहारिक रूप में आचरण में हो। तब प्रेम और क्षमाभाव सहज रीति से व्यक्त होते रहेंगे। व्यर्थ संकल्पों की उत्पत्ति क्षीण होती जाएगी।

मंजिल की स्मृति: जीवन रूपी इमारत का शिखर या कलश है लक्ष्य, जिससे जीवन गायन योग्य बनता है। लक्ष्य की स्मृति में निरंतर रहने वाला साधक, तलाश करने के संस्कार से स्वत: ही मुक्त हो जाता है क्योंकि मंजिल की समीपता उसको अतींद्रिय सुख की प्राप्ति कराती है।

उपरोक्त बातों को जीवन में धारण कर चलने वाला साधक, जिंदगी को ढूंढ़ते हुऐ भटकता नहीं है बल्कि वह जहाँ है, वहाँ ही एक पवित्र और सुंदर जीवन रूपी मंदिर का निर्माण कर लेता है। यह निर्माण, लाखों आत्माओं को जिंदगी को तलाश करने की बीमारी से छुड़ाकर, सफलता का मार्ग दर्शाने वाला उदाहरण बन जाता है।

एक गलतफहमी

मानव की एक बहुत ही बड़ी गलतफहमी यह है कि वह काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष जैसे अवगुणों को अपनी शक्ति समझ बैठा है। प्राणघातक विष को संजीवनी समझकर उसके प्रयोग द्वारा जिंदगी को ढूंढ़ रहा है, जो असंभव है। जिंदगी बनाने में अवगुणों का कोई स्थान नहीं है। जैसे इमारत की दीवारों में एक भी ईंट कच्ची हो तो उसको संपूर्ण सुरक्षित इमारत नहीं कहेंगे वैसे ही जीवन को श्रेष्ठ बनाने के मार्ग में एक भी अवगुण को अगर हम साथ ले चलते हैं तो सफलता का लक्ष्य प्राप्त करना असम्भव है। ❖

पत्र सम्पादक के नाम

ज्ञानामृत पत्रिका धर्म-कर्म की व्याख्या के साथ कथाओं के मर्म का भी बोध कराती है। पत्रिका ईश्वरीय विश्व विद्यालय की सेवाओं की प्रगति में चार चांद लगा रही है। यह जीवन दिव्य बना रही है, सबका ज्ञान बढ़ा रही है। पत्रिका हमें सिखाती है कि दुख भोगने वाला तो आगे सुखी हो सकता है लेकिन दुख देने वाला कभी भी सुखी नहीं हो सकता। पत्रिका पढ़ने से सर्वगुणों के सागर निराकार परमपिता शिव की स्मृति आती है। ज्ञानामृत पढ़ना भी आगे बढ़ना है।

हरिकिशन वर्मा (प्रणामी), बहल (हरियाणा)

ज्ञानामृत पत्रिका के अगस्त, 2017 अंक में चरित्र निर्माण को लेकर जो सम्पादकीय लिखा गया है, वह व्यवहारिक है। प्रत्येक पृष्ठ के नीचे सुन्दर प्रेरक वाक्य लिखे हैं जो जीवन को दिशा देने में सक्षम हैं। इस अंक में 'जेल में आना मेरे ही कर्मों का फल है' लेख से मैं बहुत ही प्रभावित हुआ।'ईश्वरीय ज्ञान से आन्तरिक सशक्तिकरण' यह लेख सभी नारियों के लिए प्रेरणादायक है। सम्पूर्ण पत्रिका ध्यानपूर्वक पढ़ी, बहुत अच्छी लगी। इसे मैंने राष्ट्रीय पुस्तकालय, चंदौसी को भेंट किया। वहाँ भी लोगों ने इसे बहुत पसंद किया। पूरी पत्रिका जीवन को सार्थक बनाने वाली, प्रेरणादायक, व्यवहारिक और शिक्षाप्रद है। आपके प्रयास को नमन।

सम्पादक 'तुमुल तूफानी' साप्ताहिक, चन्दौसी

अँखियों के झरोखे

ब्रह्माकुमार लोकपाल परमार, शान्तिवन (आबू रोड)

मानव शरीर प्रकृति की सर्वश्रेष्ठ रचना है। इसमें अनेक इन्द्रियाँ-कर्मेन्द्रियाँ हैं और सबका अपना-अपना महत्व है। फिर भी जो सबसे महत्वपूर्ण अंग हैं वो हैं हमारी आँखें। मस्तिष्क के बाद आँख ही शरीर का सबसे जटिल संरचना वाला अंग है। यह एक अद्भुत कैमरा भी है। आँखों को सामने रखकर ही कैमरे का अविष्कार हुआ है। हमारी आँखें मस्तिष्क की 65 प्रतिशत ऊर्जा इस्तेमाल करती हैं जो अन्य किसी भी अंग से ज्यादा है। आँखें ही मन की भावनाओं को प्रकट करने का सशक्त माध्यम हैं। आँखों की अपनी भाषा है इसलिये कहा जाता है, आँखें पढ़ ली या आँखों ही आँखों में बात हो गयी। कवियों और गीतकारों की लेखनी सबसे ज्यादा आँखों पर ही चली है। किसी ने आँखों को समन्दर, किसी ने झरोखे तो किसी ने झील कहा। सुख या दुख की हमारी भावना को आँखें गीली होकर तुरंत प्रकट कर देती हैं।

मन की आँखें अथवा तीसरा नेत्र

इन दो स्थूल नेत्रों के अलावा एक तीसरी आँख का भी गायन है जिसे दिव्य दृष्टि, मन की आँख या तीसरा नेत्र भी कहा गया है। इन स्थूल नेत्रों के बंद होने पर भी वह खुला रहता है और इन आँखों के न होने पर भी वह काम करता है। नींद के समय ये स्थूल नेत्र बंद रहते हैं, फिर भी हम स्वप्न में सब कुछ देखते रहते हैं। ऐसे तो यह तीसरी आँख शंकर जी की भृकुटि में दिखाई गयी है परन्तु यह नेत्र सभी मनुष्यों की भृकुटी में भी स्थित है और यह और कुछ नहीं बल्कि हमारी भृकुटी में बैठी चैतन्य शक्ति आत्मा ही है, जो स्वयं में एक दिव्य चक्षु है। ये स्थूल नेत्र तो इस स्थूल जगत को ही देखने में सक्षम हैं परन्तु यह दिव्य चक्षु चाँद-तारों के पार भी देख सकता है और आने वाले भविष्य को भी देख सकता है। संसार की विशिष्ट आध्यात्मिक विभूतियों ने अपनी शक्तियों का प्रक्षेपण, अपने इसी दिव्य चक्षु के द्वारा किया है।

दृष्टि नहीं, द्रष्टा जिम्मेवार

प्राय: जब-जब मनुष्य की दृष्टि कलुषित हुई तो उसने आँखों को जिम्मेदार ठहराते हुए इन्हें प्रायश्चित स्वरूप नष्ट करने की कोशिश की या आँखें बन्द कर ली या फिर आँखों पर पट्टी बाँध ली जबकि ये तो सिर्फ खिड़कियाँ हैं। इनसे क्या देखना है, यह तो हमारी मनोवृत्ति और संस्कारों के ऊपर है जो कि द्रष्टा अर्थात् आत्मा में निहित हैं। आँखें तो मृत्यु के बाद नष्ट हो जाती हैं पर इनसे किये गये पाप, आत्मा में संचित हो जाते हैं।

यदि किसी हिंसक, निर्दयी, क्रूर व्यक्ति की आँखों का प्रत्यारोपण किसी अहिंसक, दयावान, महान व्यक्ति के शरीर में कर दिया जाए तो उन्हीं आँखों से करुणा, दया, खुशी, प्रेम झलकने लगेगा। इससे सिद्द है कि दृष्टि नहीं, दृष्टा आत्मा जिम्मेवार है।

कुदृष्टि का मोतियाबिन्द

हमारी आँखों को विभिन्न प्रकार के रोग लग जाते हैं जिनमें से एक मोतियाबिन्द भी है। इसमें आँखों का प्राकृतिक लैंस धुँधला हो जाता है। उन पर एक मोटी परत चढ़ जाती है। यह तो हुई स्थूल बीमारी की बात परन्तु यही बीमारी सूक्ष्म रूप में भी होती है, वो है कुदृष्टि रूपी मोतियाबिन्द, जो कि कड़ी बीमारी होने के साथ-साथ महापाप भी है। इससे न केवल स्वयं का पतन होता है बल्कि सामने वाली आत्मा पर भी ये घातक किरणें अपना जहर फैलाती हैं, इसलिए यह दोहरा पाप है। इसका एक ही उपचार है, आत्मा भाई-भाई की पवित्र दृष्टि, स्वयं की

भृकुटि में एक प्रकाशवान ऊर्जा को देखना और दूसरे में भी उसी ज्योतिबिन्दु को देखना।

जैसी दृष्टि वैसा चिन्तन

जिस प्रकार कम्प्यूटर में अनेक प्रकार की फाइलें होती हैं। हम जिस विषय-वस्तु की फाइल को क्लिक करते हैं, उसी नाम वाली ढेर सारी फाइलें खुल जाती हैं। इसी प्रकार, हमारी आत्मा में जन्म-जन्म की अच्छी व बुरी फाइलें संरक्षित हैं। हम जिस प्रकार के चित्र या घटना को देखते हैं तो उसी से संबंधित अनेक फाइलें खुल जाती हैं। फिर वैसे ही संकल्प चलने लगते हैं। जिस चीज को हम जितनी अधिक एकाग्रता से देखेंगे, वह अन्तर्मन में उतनी ही गहरी प्रिन्ट हो जायेगी। कम्प्यूटर में तो हम जिस चीज को समाप्त करना चाहें, सेकण्ड में कर सकते हैं परन्तु इन आँखों के द्वारा मन में भरी गई सामग्री को समाप्त करना इतना आसान नहीं होता। कभी-कभी तो पिछले जन्मों की भी तस्वीरें या घटनायें जागृत हो जाती हैं। इसलिए जैसा देखेंगे, वैसा ही सोचेंगे, फिर वैसा ही कर्म होगा। कोई भी कर्म अचानक नहीं होता। कर्म पहले संकल्पों में लम्बे समय तक पलता है और अनुकूल समय आते ही घटित हो जाता है।

साफ रखें खिड़कियाँ

हमारी आँखों को इस शरीर रूपी मकान की खिड़कियाँ कहा गया है। मकान की सफाई के साथ-साथ खिड़कियों को भी साफ रखना जरूरी है। यदि खिड़कियाँ ही गन्दी हैं तो सब कुछ गन्दा ही दिखाई देगा। अतः आँखों को गन्दगी पर बैठने वाली मक्खी न बनायें बल्कि फूलों पर बैठने वाली तितलियाँ या भँवरे के समान बनायें ताकि जीवन सुगंध से भरा रहे। ये अनमोल आँखें प्रभु की अनुपम देन हैं, अमानत हैं, इन्हें सम्भालें और बचायें। ❖

विकारों रूपी वायरस

ब्रह्माकुमारी बबली शर्मा, संत नगर, दिल्ली

जैसे कम्प्यूटर में वायरस के बाद वह या तो काम करना बंद कर देता है या उसकी गति धीमी हो जाती है। दबाते हैं कुछ, दब जाता है कुछ। काम, क्रोध, मोह, लालच, अहंकार, ईर्ष्या और द्वेष आदि विकारों के आने से वही हाल आत्मा रूपी कम्प्यूटर का होता है। विकारी मनुष्य की इन्द्रियाँ उसके वश में नहीं होती हैं। वह करना चाहता है कुछ, हो जाता है कुछ। विकार रूपी वायरस का मन, बुद्धि और संस्कार तीनों पर बुरा असर पड़ता है। मन चंचल हो जाता है। बुद्धि की निर्णय शक्ति खत्म हो जाती है और बुराई को बार-बार दोहराने से आत्मा का संस्कार बुराई का बन जाता है।

स्थूल कम्प्यूटर के वायरस को हटाना जरूरी है, वैसे ही आत्मा में जो विकारों रूपी वायरस प्रवेश हो चुके हैं उन्हें भी हटाना अत्यंत आवश्यक है। वायरस हट जाने के बाद कम्प्यूटर ठीक से काम करता है। आत्मा से अगर ये विकार रूपी वायरस हट जाएँ तो आत्मा मन, बुद्धि और संस्कार तीनों पर जीत पा लेती है।

यदि हम कम्प्यूटर का रख-रखाव ठीक नहीं करते हैं तो एक बार वायरस हटाने के बाद पुनः कम्प्यूटर हैंग हो सकता है। उसी तरह एक बार परमात्मा के साथ योग लगाकर, विकारों की समाप्ति का अनुभव होने के बाद भी ये पुनः लौट सकते हैं। उत्तम तरीका है – योग की स्थिति को कभी न छोड़ें। अपनी बुद्धि की जाँच करते रहें कि किसी गलत संकल्प से या किसी गलत कर्म से वायरस आने की संभावना तो नहीं है।

कार्य-व्यवहार के दौरान भी अच्छे संस्कारों का पोषण करते रहिए ताकि आत्मा पर कोई गलत छाप न पड़े। योग ही ऐसा साधन है जिससे वायरस रूपी विकारों, कुसंस्कारों और विकर्मों का विनाश किया जा सकता है। अन्य कोई साधना है ही नहीं। ❖

अवगुणी दृष्टि समाप्त करने के उपाय

ब्रह्माकुमारी मिताली, भंगरोटू, मण्डी (हिमाचल प्रदेश)

अनुभव कहता है, विभिन्न प्रयासों के बावजूद भी हमारी दृष्टि दूसरों के अवगुणों की तरफ स्वाभाविक रूप से चली जाती है। चाहते हुए भी कि हम सबके गुण ही ग्रहण करें, हम अवगुणों को देखना, वर्णन करना, चिंतन करना और अवगुणों की गंदगी फैलाना शुरू कर देते हैं। यह मालूम होते हुए भी कि इससे हमारा पतन निश्चित है, हम इस बीमारी को खत्म करने का दृढ़ता से प्रयास नहीं करते। इस कमजोरी के वश यदि हम रहे तो अध्यात्म के मार्ग में कभी आगे नहीं बढ़ पायेंगे। इसके बहुत से नुकसान हैं, जिनका जिक्र न करते हुए केवल इसे समाप्त करने के उपायों की चर्चा करेंगे।

गुण अनेक, अवगुण एक

जब कभी हमें किसी के अंदर अवगुण दिखाई दे तो हम स्वयं से बात करें कि हरेक मनुष्य में विशेषताएँ अधिक हैं, अवगुणों की संख्या कम है, जैसे कि बड़े सफेद कागज पर केवल एक या दो काले निशान। यदि हम उन सारे गुणों व विशेषताओं को नजरअंदाज करके केवल एक-दो कमियों को देखकर किसी के प्रति अपने मन में छवि बना रहे हैं तो इसका अर्थ यही है कि हमारे लिए उस सफेद कागज अर्थात् उन सभी विशेषताओं का कोई महत्व नहीं है। ऐसा करना केवल हमारी अज्ञानता को दर्शाता है।

सृष्टि-नाटक की सुंदरता

परमपिता परमात्मा शिव ने हमें स्मृति दिलाई है कि हम सभी उनकी संतानें आपस में भाई-भाई हैं। भाई-भाई का अर्थ ही है कि हमारा पिता परमात्मा एक, हमारा आत्मिक स्वरूप एक, शारीरिक बनावट एक, आत्मिक आवश्यकताएँ (शान्ति, प्रेम, आनन्द, पवित्रता, सुख, ज्ञान, शक्ति) एक, भौतिक आवश्यकताएँ (जल, वायु, आकाश, अग्नि, पृथ्वी) एक, अत: हम सब एक समान हैं। यहाँ तक कि हम सब पर एक ही कर्म सिद्धांत लागू होता है। अगर कुछ भिन्न है तो वह है हमारा पार्ट। इस बेहद के सृष्टि-नाटक की सुंदरता और शान इसी में निहित है कि हम सब एक-समान होते हुए भी, केवल भिन्न पार्ट की वजह से एक-दो से अलग और विशिष्ट हैं। इसलिए हम सर्व को सम्मान देते चलें।

स्वयं पर एकाग्रता

यदि हमने यह लक्ष्य ले लिया है कि हमें अध्यात्म के मार्ग में निरंतर आगे बढ़ना ही है तो हम अपना सारा ध्यान स्वयं पर केन्द्रित रखें। दूसरे क्या कर रहे हैं, क्या नहीं कर रहे हैं, इस बात से हमारा ताल्लुक नहीं। हम सभी को, स्वाभाविक रूप से साक्षीद्रष्टा होकर ही देखें। यह केवल तभी संभव है जब हम स्वयं के पार्ट को श्रेष्ठ बनाने के लक्ष्य पर एकाग्र हों। फिल्म में जो हीरो एक्टर होता है, वो स्वयं की एक्टिंग को उत्तम बनाने में इतना व्यस्त होता है कि दूसरे कितना अभ्यास कर रहे हैं, यह देखने के लिए उसके पास न तो समय होता है और न ही रुचि।

अवगुणी दृष्टि समाप्त होने से लाभ

सर्व के प्रति सदा शुभभावना रखने से हमारा पुण्य का खाता जमा होता है। हमारे सम्बन्ध सर्व के साथ मधुर हो जाते हैं। किसी स्थूल कर्म में, किसी को सन्तुष्ट कर पाने में यदि हमसे कोई कमी रह भी जाती है तब भी शुभभावनाओं के कारण सभी हमसे सन्तुष्टता का अनुभव करेंगे। अवगुणी दृष्टि के समाप्त होने से हम संस्कारों की टक्कर से सुरक्षित रहेंगे और स्वयं को सदा हल्का अनुभव करेंगे, चाहे सेवाओं में या दिनचर्या में कितने भी व्यस्त हों। दुआओं का खाता जमा होने लगेगा। आध्यात्मिक विकास में एक बहुत बड़ी बाधा दूर हो जाने से, आगे का मार्ग स्पष्ट नजर आएगा और हम उसकी ओर बढ़ सकेंगे। ❖

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन -307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। संयुक्त सम्पादिका - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
▶▶ फोटो, लेख, कविता या अन्य प्रकाशन सामग्री के लिये : **E-mail : gyanamritpatrika@bkivv.org**
Website : gyanamrit.bkinfo.in **Ph. No. : (02974) - 228125**

1.चन्द्रनिगाहपुर (नेपाल)- नेपाल की राष्ट्रपति महामहिम बहन विद्यादेवी भंडारी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.मैया बहन। **2.भोपाल (गुलमोहर कालोनी)-** म.प्र.की राज्यपाल महामहिम आनंदी बहन पटेल का ब्रह्माकुमारीज स्टॉल पर तिलक लगाकर स्वागत करते हुए ब्र.कु.रीना बहन। **3.इटारसी-** म.प्र.विधानसभाध्यक्ष डॉ.भ्राता सीतासरन शर्मा को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.सुनीता बहन। **4.लन्दन-** ब्र.कु.अमीरचंद भाई को भारत गौरव अवार्ड प्रदान करते हुए भ्राता बोरोनस वर्मा, उप-उच्चायुक्त भ्राता दिनेश पटनायक तथा अन्य। **5.लन्दन-** ब्र.कु.सुदेश बहन (जर्मनी) को भारत गौरव अवार्ड प्रदान करते हुए भ्राता बोरोनस वर्मा, उप-उच्चायुक्त भ्राता दिनेश पटनायक तथा अन्य। **6.भोपाल (ईदगाह हिल्स)-** अलविदा डायबिटीज शिविर का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.अवधेश बहन, म.प्र.के पंचायत तथा ग्राम विकास राज्यमंत्री भ्राता विश्वास सारंग जी, एन.एच.डी.सी.के सी.ई.ओ. भ्राता ए.जी.अंसारी, डी.एम.ई.डॉ.बहन उल्का श्रीवास्तव तथा अन्य। **7.बुरहानपुर-** हरिद्वार दर्शन मेले का उद्घाटन करते हुए सांसद भ्राता नन्दकुमार सिंह चौहान, महापौर भ्राता अनिल भोसले, ब्र.कु.सोमगिरि बहन, ब्र.कु.पुष्पा बहन, ब्र.कु.मंगला बहन तथा अन्य। **8.पोखरा-** 'श्रीमदभगवत् गीता का सार, सफल जीवन का आधार' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए प्रदेश न.4 के मुख्यमंत्री भ्राता पृथ्वी सुब्बा जी, ब्र.कु.परणीता बहन, ब्र.कु.अप्सरा बहन तथा अन्य। **9.राजकोट-** 'क्रियेटिंग माय डेस्टिनी' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.शिवानी बहन, ब्र.कु.सुरेश ओबेराय, ब्र.कु.भारती बहन, ब्र.कु.बनारसी भाई, गुजरात फायनन्स बोर्ड के अध्यक्ष धनसुख भाई भंडेरी, पुलिस कमिश्नर भ्राता अनुपमसिंह गेहलोत, महानगरपालिका कमिश्नर भ्राता बंछानिधि पानी तथा अन्य।

1.महेश्वर- म.प्र.की राज्यपाल महामहिम आनंदी बहन पटेल को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.अनिता बहन तथा ब्र.कु.वासुदेव भाई। **2.मेनपुरी-** आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए इलाहाबाद उच्च न्यायालय की न्यायाधीश बहन विजय लक्ष्मी, ब्र.कु.अवन्ती बहन, ब्र.कु.गीतांजली बहन, एडवोकेट भ्राता प्रदीप यादव तथा डॉ.आर.एस.यादव। **3.चैलचौक (मण्डी)-** हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री भ्राता जयराम ठाकुर को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.जयंती बहन। **4.बुटवल (नेपाल)-** तुलसीपुर उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश भ्राता रमेश पोखरेल को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.लक्ष्मी बहन तथा ब्र.कु.नारायण भाई। **5.जमशेदपुर-** टाटा समूह के पूर्व अध्यक्ष भ्राता रतन एन.टाटा तथा वर्तमान अध्यक्ष (टी.एस.एल.) भ्राता एन.चन्द्रशेखरन का स्वागत करते हुए ब्र.कु.अन्जू बहन। **6.साम्बा (विजयपुर)-** जम्मू-कश्मीर के उद्योग मंत्री भ्राता चन्द्रप्रकाश गंगा को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.रानी बहन। **7.पुणे-** 'इंडियन वर्चुअल एकेडमी फॉर पीस एण्ड एजुकेशन' की ओर से ब्र.कु.मृत्युंजय भाई को लाइफ टाइम एचीवमेंट अवार्ड प्रदान करते हुए नई दिल्ली, एम्स के डॉ.भ्राता विजय कांसल। **8. जबलपुर (कटंगा कॉलोनी)-** अनुपम आध्यात्मिक समागम में शुभकामनाएँ देते हुए मेडिकल विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. आर.एस. शर्मा। मंचासीन हैं राजयोगिनी दादी रत्नमोहिनी, ब्र.कु. आत्मप्रकाश, ब्र.कु. कमला बहन तथा अन्य।